



उत्तम चरित्र कुमारनो रास.

१८१४

श्रीजिनहर्ष सूरिकृत.

वस्त्रदान फल महात्म्य रूप.

आ

माहाप्रतापि पुरुषनो चरित्र

सज्जनोने

अवश्य वांचवा योग्य जाणीने

श्रावक जीमसिंह माणकें

श्रीमुंवा नगरी मध्ये

निर्णय सागर मुद्रायंत्रमां मुद्रित कराव्यो

संवत् १९४२.



॥ अथ ॥

॥ वस्त्रदानोपरि श्री उत्तमचरित्र  
कुमाररासः प्रारब्धते ॥

॥ दोहा ॥

॥ चरम जिणोसर चित्त धरुं, करुं सदा गुणग्राम ॥  
नावठ नाजे नवतणी, लीजंते जस नाथ ॥ १ ॥ मन  
वच काया शुद्ध करी, जो कीजें जिन जाप ॥ उज्ज्व  
ल थाये आतमा, जाये दुःख संताप ॥ २ ॥ जेहने  
नामें संपजे, वंठित सुख सुविशाल ॥ कष्ट निवारे  
करि कृपा, सेवक जन प्रतिपाल ॥ ३ ॥ समरुं सर  
स्वती सामिनी, सुमती तणी दातार ॥ वीणा पुस्तक  
धारिणी, कवियण जण आधार ॥ ४ ॥ हंसासण हं  
सागमणी, त्रिभुवन रूप अनूप ॥ मोह्या इंद नरिंद  
सद्गु, न लहे कोइ सरूप ॥ ५ ॥ जो माता सुप्रसन्न  
हुवे, आपे अनुपम ज्ञान ॥ ज्ञानथकी दर्शन हुवे,  
दर्शनमोक्ष विमान ॥ ६ ॥ जिन मुख पंकज वा  
सेनी, समरी शारद माथ ॥ कहुं कथा उत्तम चरि  
त्र, सांजलजो चित्त लाय ॥ ७ ॥ नृपसुतें दीधुं नाव

शुं, वस्त्रदान मुनिराय ॥ सुख पाय्या दाम्या अरि,  
दान तणे सुपसाय ॥ ८ ॥ सरस कंथा संबंध ठे, सु  
एजो सहु नर नार ॥ आलस उंघ प्रमाद तजी, ध  
रजो चित्त मजार ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ इणहीज जंबु द्वीप मजार, दक्षिण नरतक्षेत्र  
सुविचार ॥ नयरी अनुपम वाणारसी, त्रिचुवनमां  
नही अलका इसी ॥ १ ॥ विशमो गढने विशमी पोल,  
ऊलके रविकोशीसा उल ॥ उंचा घर मंदिर कैलास,  
सप्तनूमिया जिहां आवास ॥ २ ॥ जिन मंदिर शिव मं  
दिर जिहां, साधु साधवी विचरे तिहां ॥ वारु चा  
रे वर्ण त्यां वसे, धर्मकरण सहु को उल्लसे ॥ ३ ॥ लो  
क सुखी तिहां धनद समान, घर घर दीजें वंछित दां  
न ॥ दीन दुःखीनी करे संनाल, जीव सहुना जे प्रति  
पाल ॥ ४ ॥ न करे कोइ केहनी कांई तांत, जेहथी  
थाये कलि उत्पात ॥ न करे परनिंदा परझोह, एह  
वा लोक वसे कृत सोह ॥ ५ ॥ तिण नगरी मकरध्व  
ज नूप, अजिनव मकरध्वज अनुरूप ॥ न्यायवंत गुण  
वंत कृपाल, अरिघणने लागे जेम काल ॥ ६ ॥ प  
चमो लोकपाल नूपालं, देखी हरखे बालगोपाल ॥

हय गय रथ पायक नंदार, विनव तणो लाजे नहो  
 पार ॥ ७ ॥ राणी जेहने लक्ष्मीवतो, बुद्धिमंत जा  
 एो सरस्वती ॥ रूपें जीती जेणें अपठरा, नमणी ख  
 मणी जाणो धरा ॥ ८ ॥ चउसठ नारी कलानिधि  
 जाण, हंस हराव्यो गति पिक वाण ॥ जेहनुं वपु दे  
 खा उल्लस्या, उत्तम गुण आवीमनें वस्या ॥ ९ ॥ जोगव  
 तां सुख लीजविलास, गुन सुहूरत सुत आयो ता  
 स ॥ उत्तम गुण देखी अनिराम, उत्तमचरित्र दियुं  
 तस नाम ॥ १० ॥ बीज चंडनी परें कुमार, दिन दि  
 न बाधे कलाविस्तार ॥ बीगो सहनुं आवे दाय, पूरव  
 पुण्य तणे सुपसाय ॥ ११ ॥ बालपणे पण दया वि  
 शाल, न करे केहने हरठर मार ॥ सत्यवादी मुख अ  
 मृतवाण, न्यायवंत बहु गुणनो खाण ॥ १२ ॥ श  
 स्त्र शास्त्रनी शीखी कला, धर्मशास्त्र शीख्यां निर्मला ॥  
 न लीये जेह अदत्तादान, परस्त्री जाणो बेहेन समा  
 न ॥ १३ ॥ जगति करे जिनवरनी घणी, गुरुनी जग  
 ति करे सुख जणी ॥ एहवो कुमर गुणें सुकमाज, कहे  
 जिनहर्ष प्रथम थइ ढाल ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कला बहोतेर जे नस्यां, पैमितनाम धराय ॥

धर्मकला आवी नहिं, तो मूरखना राय ॥ १ ॥ अवर  
 र सर्व विकला कला, धर्मकला शिरंदार ॥ धर्मकला  
 विण मानवी, पशुतणे अवतार ॥ २ ॥ रात दिवस  
 धर्मे रमे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ सुखदायी सहुं लो  
 कमें, यश विस्तखो अपार ॥ ३ ॥ एक दिन मनमां  
 चिंतवे, हुं हवे थयो जुवान ॥ बाप तणुं धन जोगवुं,  
 एम तो न लहुं मान ॥ ४ ॥ बापतणुं धन बालप  
 ण, खातां खोट न कांइ ॥ तरुणपणें जो जोगवे, तो  
 पुरुषातन जाय ॥ ५ ॥ सोल वरस वोढ्यां पठे, न  
 करे जो असास ॥ बाप तणी आशा करे, धिक जनभा  
 रो तास ॥ ६ ॥ सिंहु सिंचाणो शा पुरुष, न करे प  
 रनी आश ॥ निज जुज खाटयुं खाइयें, तो लहियें जश  
 वास ॥ ७ ॥ जण न कहायो जगतमां, बालपणें श  
 शवास ॥ पशु दूआ ते बापडा, पडिया खावे घास  
 ॥ ८ ॥ करुं परीक्षा कर्मनी, जोउं देश विदेश ॥ ख  
 ड्डु लेइ निशि चालियो, धरतो हरख विशेष ॥ ९ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ मारुं मन मोह्युं

रे वप्रानंदयुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कर्म परिक्षा रे करण कुमर चव्यो रे, धरतो म  
 नमां उत्साह ॥ साथें लीधो रे जाग्यसखायीयो रे

धीरजवंत गजगाह ॥ १ ॥ क० ॥ रणवनवासी गा  
 म नगर फरे रे, जोतो ख्याल अपार ॥ नमतो न  
 मतो चित्रकूट आवियो रे, एकलडो शिरदार ॥ २ ॥  
 क० ॥ महिसेन राजारे तेणे पुर राजियो रे, देश जे  
 हनो मेदपाट ॥ जेहने पोतरे बाणुं लख मालवो रे,  
 मरु मंमल करणाट ॥ ३ ॥ क० ॥ देशघणाना रे नरपति  
 उलंगे रे, पुहवी प्रबल प्रताप ॥ निशदिन लीणो रे  
 हे जिन धर्मशुं रे, जाणे राज्य संताप ॥ ४ ॥ क० ॥ पु  
 त्र नहीं रे राजधुरा धरें रे, केहने आपुं राज ॥ योग्य  
 नही रे कोइ राज्य पालवा रे, ठोडंतां पण लाज  
 ॥ ५ ॥ क० ॥ उत्तम कोइ रे जो पुण्यवंत मिले रे,  
 तो तेहने देउं नार ॥ नियत करुं रे आतम साधना  
 रे, लेउं लेउं संजम नार ॥ ६ ॥ क० ॥ एक दिन रा  
 जारे रमवा निसखो रे, सार्थें बहु परिवार ॥ नव व  
 य वारु रे लक्ष्मण सुंदरू रे, थइ घोडे असवार ॥ ७ ॥  
 क० ॥ नवल वठेरो रे चंचल गति नहीं रे, पूढे मं  
 त्रीने नूप ॥ कहो केम मंदगति ए अश्वनी रे, कोइ  
 न जाणे स्वरूप ॥ ८ ॥ क० ॥ वली वली पूढे रे  
 कोइ बोले नही रे, कोइ न जाखे विचार ॥ राय स  
 मीपें रे अश्व निहालीने रे, व्याव्यो उत्तम कुमार



॥ ए ॥ क० ॥ कुमर पर्यपे रे सुणो माहारायजी रे,  
 एणे पियुं महिषीनुं दूध ॥ मंदगतिं थइ रे तेणे ए कि  
 शोरनी रे, नहीं गति चंचल शुद्ध ॥ १० ॥ क० ॥ प  
 थ महिषीनुं रे थाये वायडुं रे, वायें गति नारे होय  
 ॥ तुं केम जाणे रे वत्स राजा कहे रे, झानी चतुर  
 ठे कोय ॥ ११ ॥ क० ॥ अश्वपरीक्षा रे जाणुं राय  
 जी रे, उत्तमचरित्र कहे ताम ॥ राय कहे रे साचुं तें  
 कहुं रे, लघुवय विद्याधाम ॥ १२ ॥ क० ॥ बाल  
 पणायी रे एहनी मा सुइ रे, बालक कांइ न खांय ॥  
 महिषी दूधें रे एह उल्लेरियो रे, तें जाखुं ते न्याय  
 ॥ १३ ॥ क० ॥ गुण देखीने रे उत्तमकुमारना रे, हर्षि  
 त थयो रे जूपाल ॥ बीजी पूरी रे थइ ठे एटले रे,  
 कहे जिन हर्ष ए ढाल ॥ १४ ॥ क० ॥ सर्वगाथा ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरतणा गुण देखीने, रीज्यो चित्त नरेश ॥ रा  
 जकुमर ठे ए सही, निकलियो परदेश ॥ १ ॥ जोतां  
 ए जुगतो मित्यो, राजकाज समरब्ध ॥ एहने राज्य दे  
 इ करी, साधुं हुं परमब्ध ॥ २ ॥ सांजल हो तुं शा पु  
 रुप, लइयें माहारुं राज ॥ हुं दीक्षा लेइश हवे, सारि  
 श आतम काज ॥ ३ ॥ नाग्य संजोगें मुज नणी,

तुं मज्जियो गुणवंत ॥ ए जखियो ठे ताहरे, वखते  
राज्य महंत ॥४॥ जेहने जेहवुं जोग्यता, तेहने तेह  
वुं होय ॥ कानें कुंमल रयणमय, नयणें काजल जोय ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ नेम लाजन मोरे

मन वस्यो ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरकहे सुणतासजी, तुझे कहुं ते प्रमाणो  
रे ॥ पण मुज आगल जायवुं, करवा काम कढ्याणो  
रे ॥ १ ॥ कुण ॥ काम करीनें आवसुं, वलतुं कहुं क  
रेसुं रे ॥ जे देख्यो सुप्रसन्न थइ, ते ततक्षण हुं जेस्युं  
रे ॥ २ ॥ कुण ॥ एम कही राय चरण नमी, कीधुं  
कुमर प्रयाणो रे ॥ पुहवी अचरिज जोवतो, जोतो  
विविध विनाणो रे ॥ ३ ॥ कुण ॥ नमतो नमतो अ  
नुक्रमें, नरुयह नयरें आयो रे ॥ पुरनी शोना जोव  
तो, हैडे हार्षित आयो रे ॥ ४ ॥ कुण ॥ श्रीमुनिसुवत  
देहरे, जइ प्रणम्या जिनराजो रे ॥ जाव नक्ति स्तव  
ना करे, धन्य दिवस मुज आजो रे ॥ ५ ॥ कुण ॥ मूरति  
प्रभु मनमोहिनी, आर्त्ति जगत समावे रे ॥ जनमन  
आनंदकारिणी, दीठा स्वामी सुहावे रे ॥ ६ ॥ कुण ॥  
वंडित दान कलपलता, जवडुःख सायर नावो रे ॥ मू  
रति अमृतस्पंदिनी, जागे समकित नावो रे ॥ ७ ॥

॥ कु० ॥ तुं जगबंधव जगधणी, तुं जग दीन दया  
लो रे ॥ तुं जगतारक जगपति, करुणावंत कृपालो  
रे ॥ ८ ॥ कु० ॥ श्री जिनराज जुहारीने, आयो साथ  
र तीरो रे ॥ ९ ॥ कु० ॥ नूरि वाहण तेणें पूरियां, म  
गधदीप जणी आयो रे ॥ अष्टादश जोजन सयां, ले  
इ सुनट सखायो रे ॥ १० ॥ कु० ॥ कुमर नमरप  
ण कौतुकी, कुबेरदत्त संघातो रे ॥ वाहण वेगो जो  
यवा, वारिधि ख्याल विख्यातो रे ॥ ११ ॥ कु० ॥ वाह  
ण चाट्यां गुन दिनें, शकुन लेइ श्रीकारो रे ॥ केट  
लेक दिवसें गये, खूटयो वारि विचारो रे ॥ १२ ॥  
॥ कु० ॥ शून्यदीप जलकारणें, लोकें वाहण ढोयां  
रे ॥ सद्गु उत्तरिया ऊहाजथी, जलनां स्थानक जोयां  
रे ॥ १३ ॥ कु० ॥ लोक संग्रह जलनो करे, हवे ते  
णे दीप मकारो रे ॥ अमरकेतु राक्षस रहे, निर्दय  
क्रूर अपारो रे ॥ १४ ॥ कु० ॥ ठसहससेंती परिव  
खो, आव्यो तिहां कृतांतो रे ॥ जाव्या लोक सहू  
तेणें, थया मनमां जयत्रांतो रे ॥ १५ ॥ कु० ॥ केइ  
नर जाव्या काखमां, केइ नर जाव्या हाथो रे ॥ केइ  
पगमांहे चांपी रह्यो, नाठा केइ अनाथो रे ॥ १६ ॥

( ए )

॥ कु० ॥ केइ वाहण चडी चालिया, कुमर एकाकी  
वीरो रे ॥ सत्त्ववंतं उपगारियो, सहु मूकाव्या सधीरो  
रे ॥ १७ ॥ कु० ॥ राहुसखुं युद्ध मांमियुं, उत्तम चरित्र  
कुमारें रे ॥ कहे जिनहर्ष . कुमर लडघो, ब्रीजी ढा  
ल मजारो रे ॥ १८ ॥ कु० ॥ सर्वगाथा ॥ ६९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ युद्ध करतां जीत्यो कुमर, हास्यो असुर पलाद ॥  
सैन्य सहित नासी गयो, ऐ ऐ पुण्य प्रसाद ॥ १ ॥ कु  
मर सिंधुतट आवियो, खेडी गया जिहाज ॥ चतुर चि  
त्तमां चिंतवे, लोकमाहि नहीं लाज ॥ २ ॥ में ठोडा  
व्या सहु नणी, कीधो में उपकार ॥ सहुने राख्या जी  
वता, कृतघ्नी अया अपार ॥ ३ ॥ मुजने मूकीने ग  
या, नरदरिया मजार ॥ सहुको आपसवारथी, खोटो  
ए संसार ॥ ४ ॥ मुख मीठा जूठा हिये, रखे पतिजो  
कोय ॥ जसु कीजें उपगारडो, सो फरी वैरी होय ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ अलबेलानी देशी ॥

॥ कुमर विचारे चित्तमां रे लाल, लोक तणो  
श्यो दोष ॥ उपगारीरे ॥ नय व्याकुल न खमी शक्या  
रे लाल, राहुस केरो रोष ॥ उपगारी रे ॥ १ ॥ कु० ॥ ज  
न्मांतर कीधां होशे रे लाल, में केइ विरुथां पाप ॥

॥ ३० ॥ तेह कर्म आव्या उदे रे लाल, पाम्या एह  
 संताप ॥ ३० ॥ १ ॥ कु० ॥ एहवुं चिंतवी चित  
 मां रे लाल, ध्वज बांधी एक वृद्ध ॥ ३० ॥ वन फल  
 खातो तिहां रेहे रे लाल, साहसवंत सुदह ॥ ३० ॥  
 ॥ ३ ॥ कु० ॥ द्वीप तंणी अधिवासिनी रे लाल,  
 देवीयें दीगो ताम ॥ ३० ॥ कुमर रूप रलियामणुं रे  
 लाल, जाणो अजिनव काम ॥ ३० ॥ ४ ॥ कु० ॥  
 कामराग व्यापत अइ रे लाल, निपट कुमरनी पास  
 ॥ ३० ॥ आवीने एणि परें कहे रे लाल, वारु वच  
 न विलास ॥ ३० ॥ ५ ॥ कु० ॥ सांजल हो नर सा  
 हसी रे लाल, हुं देवी एणे द्वीप ॥ ३० ॥ रूपें मो  
 ही ताहरे रे लाल, आवी तुज समीप ॥ ३० ॥ ६ ॥  
 ॥ कु० ॥ ए तो पुण्यें पामियें रे लाल, सुरनारी संयो  
 ग ॥ ३० ॥ तुं प्रीतम हुं पदमिणी रे लाल, मुजछुं  
 नोगव नोग ॥ ३० ॥ ७ ॥ कु० ॥ तुजने मलवा मा  
 हरुं रे लाल, हियहुं धरे उल्लास ॥ ३० ॥ द्यो लाहो  
 जोबन तणो रे लाल, पूरो मुज मन आश ॥ ३० ॥  
 ॥ ८ ॥ कु० ॥ रूप निहाली ताहरुं रे लाल, गुण  
 देखी सुविलास ॥ ३० ॥ मन चंचल तुज वांसे अयुं  
 रे लाल, कृण मेल्हे नहीं पास ॥ ३० ॥ ९ ॥ कु० ॥

मन आये ठे व्याकुलुं रे लाल, ढील न खमणी जाय  
 ॥ उ० ॥ काया मेली दे हवे रे लाल, घणे कहे शुं  
 आय ॥ उ० ॥ १० ॥ कु० ॥ कुमर कहे देवी सुणो  
 रे लाल, म कहीश एहवी वात ॥ उ० ॥ किहां देवी  
 किहां मानवी रे लाल, सरिखी न मले धात ॥ उ० ॥  
 ॥ ११ ॥ कु० ॥ परनारी मुज वहेनडी रे लाल, पर  
 नारी मुज मात ॥ उ० ॥ हुं बंधव परनारीनो रे लाल,  
 साची मानो वात ॥ उ० ॥ १२ ॥ कु० ॥ परनारी  
 जे नोगवे रे लाल, जलो न जाखे कोय ॥ उ० ॥  
 एणे नव अपजश तेहनूं रे लाल, परनव दुर्गति हो  
 य ॥ उ० ॥ १३ ॥ कु० ॥ हुं ठोरुं तुं तहरो रे ला  
 ल, तुं ठे माहारी माय ॥ उ० ॥ शरणे आव्यो ताहरे  
 रे लाल, कररहा सुपसाय ॥ उ० ॥ १४ ॥ कु० ॥  
 रीशाणी देवी कहे रे लाल, कां रे मूढ गमार ॥ उ० ॥  
 माय वहेन मुजने कहे रे लाल, सगपण किशो विचार  
 ॥ उ० ॥ १५ ॥ कु० ॥ कहुं करीश नही माहरूं रे  
 लाल, देश तुजने दुःख ॥ उ० ॥ जो जाणे हुं जीवतो  
 रे लाल, मुजशुं नोगव सुख ॥ उ० ॥ १६ ॥ कु० ॥  
 हुं तूठी तुजने दिशुं रे लाल, अरथ गरथ जंमार ॥  
 ॥ उ० ॥ रूठी तो हुं तुज नणी रे लाल, मारीश खड

ग प्रहार ॥ उ० ॥ १७ ॥ कु० ॥ कुमर जणी बीही व  
राववा रे लाल, रूप कीधुं विकराल ॥ उ० ॥ कहे जिन  
दर्प सुणो हवे रे लाल, ए चोथी थइ ढाल ॥ उ० ॥  
॥ कु० ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ ए२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ काढी खड्डु कहे सुरी, कारे मरे निटोल ॥ हितका  
रण तुजने कहें, मान मान मुज बोल ॥ १ ॥ मुआ  
मां कांइ नथी, जीवतां कव्याण ॥ शुं जाये ठे ताहरुं,  
करेज खांचाताण ॥ २ ॥ कुमर कहे कर जोडिने, सां  
जल मोरी माय ॥ मुजथी एहवुं नवि होवे, क्यारें  
ए अन्याय ॥ ३ ॥ सुधापानथी जो मरे, चंइ पडे अं  
गार ॥ तो पण हुं परनारीने, न करुं अंगोकार ॥ ४ ॥  
जो जाणे तो मार तुं, जो जाणे तो तार ॥ आगल  
पाठल सहु जणी, मरवुं ठे एकवार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ बहेनी रही न सकी

तिसेंजी ॥ ए देशी ॥

॥ साहस देखी तेहनूं जी, देखी शीज उदार ॥ उ  
त्तमगुण देखी करी जी, देवी कहे तेणि वार ॥ १ ॥  
सलूणा ॥ धन धन तुज अवतार ॥ तुज सरीखो कोइ  
नहीं जी, जोतां एणे संसार ॥ स० ॥ ध० ॥ ए आं

कणी ॥ तुज दरिअण देखीकरी जी, पवित्र थया मुज  
 नेण ॥ श्रवण सफल थया माहरा जी, सांनली ताह  
 रांवेण ॥ १ ॥ स० ॥ प्राणयकी पण तुज जणी जी,  
 वाढहुं लांगुं रे शील ॥ चित्त चूक्युं नहीं ताहरुं जी,  
 शीलें पामीश लील ॥ २ ॥ स० ॥ खुशी अइ देवी करे  
 जी, स्तवना बे कर जोड ॥ आगलें मूकी कनकनी  
 जी, रयणनी बादश कोड ॥ ४ ॥ स० ॥ पाय प्रण  
 मी देवी गइ जी, समुद्रदत्त तिहां शेर ॥ शेर कहे मु  
 ज बाहणें जी, आवी बेसो निचिंत ॥ ५ ॥ स० ॥ ध  
 न लेइ प्रवहण चढ्यो जी, चाढ्या समुद्र मजार ॥  
 जरदरिया विचें चालतां जी, खूट्यो बाहण वारि ॥  
 ॥ ६ ॥ स० ॥ निगरण सूकां लोकनां जी, जलविण  
 सूकारे होत ॥ आकुल व्याकुल सहू थयां जी, मर  
 वानी अइ गोत ॥ ७ ॥ स० ॥ हा हा धिक जलचरथ  
 की जी, अमें थया सत्त्व दीन ॥ जलचर जल पाखें  
 मरेजी, अमें जलमांहे दीन ॥ ८ ॥ स० ॥ दीन व  
 चन विलवे सहू जी, शुं याशे जगदीश ॥ जल वि  
 ण प्राण रहे नहीं जी, मरवुं विशवा वीश ॥ ९ ॥  
 ॥ स० ॥ शास्त्र नीहालीने कहे जी, निर्यामक तेणि  
 वार ॥ बेल उतरशे नीरनी जी, हमणा ए निरधार ॥



( १४ )

१० ॥ स० ॥ प्रगट होशे जलकांतमय जी, पर्वत  
जलअस्पृष्ट ॥ कूप ठे तेनी उपरें जी, स्वाडवंत जल  
मिष्ट ॥ ११ ॥ स० ॥ परंपरायें सांजव्युं जी, वली ठे  
शास्त्र सजार ॥ यानपात्र थापी करी जी, तिहां जइ  
लीजें वारि ॥ १२ ॥ स० ॥ निर्यामक वाणी सुणी  
जी, खुशी थया सहु लोक ॥ कहे जिन हरख कहुं  
इशुं जी, पांचमी ढाल विलोक ॥ १३ ॥ स० ॥ स  
र्वगाथा ॥ १११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पण एक महानय ठे इहां, नमस्केतु इणें ना  
म ॥ राक्षस रहे ठे द्वीपमां, तेहनूं ठे ए ठाम ॥ १ ॥  
सहस ठ सय कोणप रहे, रात दिवस ते पास ॥ मा  
हामांस नक्षत्र करे, क्रूर अधिक उत्रास ॥ २ ॥ स  
मुद्देवता तेहने, शपथ कराव्यो एह ॥ तेतो तीर्ण न  
क्षत्र करे, प्रवहण तजवा तेह ॥ ३ ॥ निज इच्छायें ते  
रहे, वचन सुण्यां श्रवणेह ॥ वात करंतां एटले, प  
र्वत प्रगटयो तेह ॥ ४ ॥ लोकें कूप निहालियो, प  
ण राक्षसनी नीति ॥ तरण्या पण बेसी रह्या, वाह  
णमां चलचित्त ॥ ५ ॥

॥ ढाल बघी ॥ इमर आंवा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे जल कां न द्यो रे, बेसी रह्या त  
मे केम ॥ चालो थइ उतावला रे, जलविण तूटे प्रे  
म ॥ १ ॥ कुमरजी । जल केम आणुं जाय, एतो रा  
हसुनो जय थाय ॥ एतो वात विपम कहेवाय, ए  
तो फोगट मरण उपाय ॥ २ ॥ कुण॥ करुणा आ  
णी लोकनी रे, उपगारी मतिमंत ॥ बाण अबाण  
लेइ करी रे, बोले एम बलवंत ॥ ३ ॥ कुण॥ वाह  
णथी हवे ऊतरो रे, मत बीहो मन मांहि ॥ हुं र  
हक हुं तुम तणो रे, राखुं राहस साहि ॥ ४ ॥  
॥ कुण॥ सुज आगल ए बापडो रे, एहनुं गुं ठे  
जोर ॥ सुर सुरपति पण माहरी, रे चांपी न शके को  
र ॥ ५ ॥ कुण॥ रात्रिचरनी नाणगुं रे, सुपनामां  
पण जीति ॥ यानपात्रथी उतस्यो रे, राजवियांनी  
रीति ॥ ६ ॥ कुण॥ कुमर बाण खेंची करी रे, उजो  
कूवा तीर ॥ लोक जाजन लइ आवियां रे, जरवा नि  
र्मल नोर ॥ ७ ॥ कुण॥ जाजन बांधी रांढवे रे, मू  
क्युं कूप मझार ॥ कूवाथी नवि निसरे रे, एक चळुं  
पण वारि ॥ ८ ॥ कुण॥ जलनृतजल नवि नोसरे रे, इहां  
कारण ठे कोय ॥ पण कोइ खबर करे नहीं रे, रा

हसनो जय होय ॥ ९ ॥ कु० ॥ एहवो कोइ बजवं  
 त ठे रे, पेशी कूवामांहे ॥ नीर करे कोइ मोकलुं रे,  
 सहुने करे उत्साह ॥ १० ॥ कु० ॥ केणही वचन न  
 मानियुं रे, कुमर थयो दुशीयार ॥ वारे शेठ कुमारने रे,  
 ताहरो ठे आधार ॥ ११ ॥ कु० ॥ कूवामां पेशी क  
 री रे, हुं करुं मुगतुं नीर ॥ लोकतृषाकुज सहु म  
 रे रे, तेणें मुज मन दिलगार ॥ १२ ॥ कु० ॥ रज्जु  
 विलंबी उतखो रे, कूवामांहे कुमार ॥ सात्विक चक्र  
 वर्त्ति सारिखो रे, लोक तणो आधार ॥ १३ ॥ कु० ॥  
 पण कंचननी जालिका रे, उपर ठे अनिराम ॥ जा० ॥  
 ठिड्मांहेथी जल नखुं रे, दीतुं नयणें ताम ॥ १४ ॥ कु०  
 चतुर विचारे चित्तमां रे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ कहे  
 जिनहर्ष थयुं इश्युं रे, ठछी ढाल मजार ॥ १५ ॥  
 ॥ कु० ॥ सर्वगाथा ॥ १३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अहो अहो अचरिज इश्युं, कियें निपायुं एह ॥  
 कनक कंबानी जालिका, देखी उल्लसे देह ॥ १ ॥ उ  
 रि परि कीधी कुमर, जाली कंबा तेह ॥ जल मारग  
 कीधो प्रगट, लोकां नणी कहेह ॥ २ ॥ जल काढो  
 गाढा थइ, म करो हवे विलंब ॥ तृषामांहे अमृत

लह्यो, फल्यो अकार्लें अंब ॥ ३ ॥ जल काढी नाजन  
 नखां, हवे कुमर तेणि वार ॥ कूपर्नीतमां बारणुं, म  
 णि सोपानुं दार ॥ ४ ॥ देखी मनमां चिंतवे, नाग्य  
 परीक्षा काज ॥ हुं परदेशें निसख्यो, ठोडी घरनुं राज  
 ॥ ५ ॥ चित्रकूट स्वामी तणुं, ते पण न लियुं राज ॥  
 मूकाव्या राहुसथकी, लोंकांतणा समाज ॥ ६ ॥ पा  
 णी में कीधुं प्रगट, सांप्रत कूप मजार ॥ तृपा गमावा  
 लोकनी, कीधो ए उपकार ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ माहाविदेह क्षेत्र सो  
 हामणुं ॥ ए देशी ॥

॥ कौतुक जोवा कौतुकी, चाढ्यो चतुर सुजाण  
 लाल रे ॥ वाट बांधी रे वारु चोरसें, कीजें केहां व  
 खाण लाल रे ॥ १ ॥ कौण ॥ मणिसोपान सोहाम  
 णां, कंचनमय प्रासाद लाल रे ॥ आगल कुमर नि  
 हानियुं, देखी थयो आल्हाद लाल रे ॥ २ ॥ कौण ॥  
 बेठी पहेली नूमिका, वृद्धा नारी एक लाल रे ॥ जइ  
 ने तिहां उजो रह्यो, बोली आणी विवेक लाल रे ॥  
 ॥ ३ ॥ कौण ॥ कां रे मूरख मानवी, हीणपुण्य बुद्धि  
 हीण लाल रे ॥ नूलो, आब्यो जमघरें, आऊखुं  
 थयुं क्षीण लाल रे ॥ ४ ॥ कौण ॥ कानेंही नवि सां

जल्यो, चमरकेतु किनास लाल रे ॥ कुमर कहे हुं उ  
 लखुं, में जीत्यो ठे तास लाल रे ॥ ५ ॥ कौ० ॥  
 पूढुं तुजने मावडी, केहनो ए प्रासाद लाल रे  
 ॥ तुं कोण केम बेठी इहां, कहे मूकी बिखवा  
 द लाल रे ॥ ६ ॥ कौ० ॥ वचन सुणी बलवंतनां,  
 वृद्धा कहे सुण वीर लाल रे ॥ तुं सत्यवंत शिरोम  
 णि, दीसे गुणगंजीर लाल रे ॥ ७ ॥ कौ० ॥ राहुस  
 द्वीप इहां ठूकडो, लंका नयरी ईस लाल रे ॥ चमर  
 केतु राहुस बली, राज्य करे अवनशी लाल रे ॥ ८ ॥  
 ॥ कौ० ॥ कन्या तास मदालसा, सयल कलानी जाण  
 लाल रे ॥ लहण अंगें शोजतां, रूपें रति पिकवाण  
 लाल रे ॥ ९ ॥ कौ० ॥ देवकुमरीने सारिखी, एहवी  
 नहिं कोइ अन्य लाल रे ॥ राय जणी वाढही घणुं,  
 पोतें पुण्य अगण्य लाल रे ॥ १० ॥ कौ० ॥ चमरके  
 तु नृप एकदा, नैमित्तिक पूढेह लाल रे ॥ मुज कन्या  
 वर कोण होशे, कहे विचारी तेह लाल रे ॥ ११ ॥  
 ॥ कौ० ॥ एहने वर नूचर होशे, दक्षिण राजकुमा  
 र लाल रे ॥ हिमवंत सीमा राज्यनी, दक्षिणलंका  
 धार लाल रे लाल रे ॥ १२ ॥ कौ० ॥ महाराजाधि  
 राजा होशे, दल बल जास अपार लाल रे ॥ विद्या

( १९ )

धर नर राजवी, सेवा करशे तास लाल रे ॥ १३ ॥  
॥ कौ० ॥ वयण सुणीने तेहनां, खेद लह्यो नूपाल  
लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष कियुं दुखये, हाहा सात  
मी ढालं लाल रे ॥ १४ ॥ कौ० ॥ सर्वगाथा ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूचरपुत्री परणशे, कन्या देवकुमार ॥ खेचर  
शुं खूटी गया, एहवो करी विचार ॥ १ ॥ समुद्रमां  
हे पर्वत शिखर, कूपमांहे करी वार ॥ मोहोटी महे  
ल रच्यो इहां, कोइ न जाणे सार ॥ २ ॥ कन्याने  
राखी इहां, राखी मुज रखवाल ॥ पंचरतन कुमरी नणी,  
दीधां ठे नूपाल ॥ ३ ॥ हुं दासी हुं तेहनां, त्रमरके  
तु लंकेश ॥ धनधान्यादिक मोकले, कूपवाट सुविशे  
प ॥ ४ ॥ कूत्रामांहे पडण जय, जाती कनक बणा  
य ॥ जतन करी राखी इहां, नूचर केम परणाय ॥ ५ ॥  
॥ ढाल आठमी ॥ जीहो मिथिला नगरीनो राजियो ॥

॥ ए देशी ॥

॥ जीहो एकदिन अपर निमित्तीयो, जीहो पूठे रा  
हस तास ॥ जीहो कहेने मुज कन्या तणो, जीहो  
कोण वर याशे नास ॥ १ ॥ लंकापति पूठे तास  
विचार ॥ ए आंकणो ॥ जीहो पूरवली परें तेणें कयुं,

जीहो चढियो क्रोध अपार ॥ १ ॥ लं० ॥ जीहो च  
 मरकेतु नाखे वली, जीहो केम जांणीजें तेह ॥ जीहो  
 नाखे ताम निमित्तियो, जीहो सांजल नृप सुसनेह  
 ॥ ३ ॥ लं० ॥ जीहो जंत्रिक जन नखवा नंणी, जी  
 हो तुं गयो दीपमफार ॥ जीहो तुजने जीत्यो एकले,  
 जीहो ते नर तुं अवधार ॥ ४ ॥ लं० ॥ जीहो मास एक  
 थयो तेहने, जीहो सांजली चढियो क्रोध ॥ जीहो रा  
 हसदल मेली करी, जीहो हणवा गयो ते जोध ॥ ५  
 ॥ लं० ॥ जीहो आगल गुं थारो हवे, जीहो ते जा  
 ए जगदीश ॥ जीहो कुमर विचारें ते सही, जीहो रा  
 हस तणो अधीश ॥ ६ ॥ लं० ॥ जीहो एतो में जा  
 एयो हवे, जीहो मुज वैरीनुं गम ॥ जीहो घाट वाट  
 रोकी रह्यो, जीहो मुज मारेवा काम ॥ ७ ॥ लं० ॥ जीहो  
 कूड कपट मायावीनी, जीहो ए राहसनी जात ॥ जी  
 हो जतन करी रहेवुं इहां, जीहो प्रगट न करवी वा  
 त ॥ ८ ॥ लं० ॥ जीहो कुमरो ताम मदालसा, जीहो  
 रूप कला नंमार ॥ जीहो देवजुवनथी उतरी, जीहो  
 जाणे देवकुमारि ॥ ९ ॥ लं० ॥ जीहो कुमररूप देखी क  
 रो, जीहो मोही कुमरी ताम ॥ जीहो वदन कमल जोइ  
 रह्यो, जीहो जेम दालिड़ी दाम ॥ १० ॥ लं० ॥ जी

( २१ )

हो रायकुमर पण तेहनूं, जीहो मोह्या देखी रूप ॥ जी  
हो चपल नयण चींटी गयो, जीहो जाग्यो प्रेम अ  
नूप ॥ ११ ॥ लं० ॥ जीहो ब्रेहुनो राग जोइ करी, जी  
हो वृक्षां नारी ताम ॥ जीहो गंधर्व विवाह करी ति  
हां, जीहो परणाव्यां तेणे ठाम ॥ १२ ॥ लं० ॥ जी  
हो पृथिव्यादिक चारे जलां, जीहो पांचमुं रतन आ  
काश ॥ जीहो प्राजाविक पांचे जलां, जीहो देवाधि  
ष्ठित खास ॥ १३ ॥ लं० ॥ जीहो पांच रतन मदा  
जसा, जीहो लेइ वृक्षा रे नारि ॥ जीहो आव्यो कुमर  
उतावलो, जीहो तेणिहिज कूप मजार ॥ १४ ॥ लं०  
जीहो समुद्रतना आदमी, जीहो जल काढे तिणी वा  
र ॥ जीहो कहे जिन हर्षे शुं हवे, जीहो उत्तम चरि  
त्रकुमार ॥ १५ ॥ लं० ॥ सर्वगाथा ॥ १७१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ बाहिर काढो मुज नणी, जाखे एम कुमार ॥  
रक्तु प्रयोगें निसखां, त्रणे जण तेणि वार ॥ १ ॥ स  
घले विस्मय पामियो, अचरिज अयुं अपार ॥ जलदेवी  
के किन्नरी, के अपठर अवतार ॥ २ ॥ कुमरनणी पूढे  
सहू, सुर कन्या कोण एह ॥ सहु वृत्तांत सुणी इशुं,  
हरख्या सहु नर तेह ॥ ३ ॥ प्रवहण चढीने चालि



या, धरता मन आणंद ॥ बलि दिवस केटले गए, जल  
खूट्युं नही बुंद ॥४॥ लोक सहु आकुल थया, तूट  
ए लाग्यां प्राण ॥ मरण मान सहुको थया, सहुनी  
थाशे हाण ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ पारधीयानी देशी ॥

॥ जांखे एम मदालसां रे. विनय करीने नेह रे  
॥ प्रीतमजी ॥ मरशे सहु ए मानवीरे, पाणी पाखें एह  
रे ॥१॥ प्रीतमजी ॥ तुमें मारा आतमजी, तमने कहुं  
जेम तेमजी ॥ जल मलशे कहो केमजी के ॥ करवो  
करवो रे उपाय कोइ तेह रे ॥ २ ॥ प्रीत० ॥ ए आं  
कणी ॥ कुमर कहे जल केम मले रे, खारा समुद्र मजा  
र रे ॥ प्री० ॥ वीपकूप कोइ नहीं रे, सुणी सुकुनि  
णी नार रे ॥ प्री० ॥ ३ ॥ मुज आनरण करंमियो  
रे, स्वामी उघाडो एह रे ॥ प्री० ॥ पांच रतन एमां  
हे ठे रे, गुण सांजल तुं तेह रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ नूदेवा  
धिष्ठित ठे रे, पूजी मागे पास रे ॥ प्री० ॥ आल क  
चोलां कनकनां रे, विविध जाजन दे खास रे ॥ ५ ॥  
॥ प्रीत० ॥ शयनासन आदिक जलां रे, मग गोधूम  
सुशालि रे ॥ प्री० ॥ नूपण मणिकंचन तणां रे, प्रग  
ट दुवे ततकाल रे ॥६॥ प्री० ॥ नीररतन नन मूकीयें

रे, वंछित जलनी वृष्टि रे ॥ प्री० ॥ शालि दाल सहु  
 खडी रे, तेज रतनें सुवृष्टि रे ॥ ७ ॥ प्री० ॥ वायुर  
 तन गगने धखुं रे, मृडअनुकूल समीर रे ॥ प्री० ॥  
 गगन रतन पटकूल दे रे, देव दुष्यादिक चीर रे ॥ ८  
 ॥ प्री० ॥ करुणा करी प्रीतम तुमै रे, दुःखिया लोक  
 निहाल रे ॥ प्री० ॥ पांच रतन लेइ करी रे, नीर तृषा तुं  
 टाल रे ॥ प्री० ॥ नदी न निज पाणी पीये रे, निजरूल  
 वृद्ध न स्वाय रे ॥ प्री० ॥ मेह न मागे सर नरे रे, परउ  
 पगारें आय रे ॥ १० ॥ प्री० ॥ जे अविजंबे वेलीयां रे,  
 आपद दे आधार रे ॥ प्री० ॥ शरणें राखे मारतां रे,  
 ते मोहोटा संतार रे ॥ ११ ॥ प्री० ॥ उपगारी तम  
 सारिखा रे, जग सरज्या किरतार रे ॥ प्री० ॥ पर  
 नां दुःख नाजन जणी रे, वली करवा उपगार रे ॥  
 ॥ १२ ॥ प्री० ॥ नारी वचन एहवां सुणी रे, ह  
 रित ययो कुमार रे ॥ प्री० ॥ धन्य ए नारी सुलक्ष  
 णी रे, धन्य एहनो अवतार रे ॥ १३ ॥ प्री० ॥ रा  
 क्षस कुलें ए उपनी रे, एहवी दीनदयाल रे ॥ प्री० ॥  
 कहे जिनहर्ष सोहामणी रे, ए अइ नवमी ढाल रे  
 ॥ १४ ॥ प्री० ॥ सर्व गाथा ॥ १५ ॥

( १४ )

॥ दोहा ॥

॥ नारी वयण सुणी करी, प्रसुंदित थइ कुमार ॥  
कूआथंनैं बांधियुं, नीररतन तेणि वार ॥ १ ॥ मेघवृ  
ष्टि हुइ तुरत, सहू नखां जलपात्र ॥ लोक खुंशी सहु  
को थयां, शीतल कीधां गात्र ॥ २ ॥ पांचे रतन प्र  
नावथी, विविध किया उपगार ॥ लोक सहु सेवा क  
रे, गुण मोहोढो संसार ॥ ३ ॥ गुण पूजाए लोक  
मां, गुणने आदर आय ॥ राजा परजा गुणथकी, स  
हुको लागे पाय ॥ ४ ॥ समुद्धत दीठी नयण, नारी  
रतन एक दीस ॥ कामैं व्यामोहित थयो, ऐऐ रू  
प जगदीश ॥ ५ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ करम परीक्षा करण

कुमर चढ्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनमांहे पापी रे श्रोत एम चिंतवे रे, एहनी ना  
री रे होय ॥ तो हुं जाणुं रे नव सफलो थयो रे, मु  
ज सरिखो नही कोय ॥ १ ॥ मनमां० ॥ एहवी ना  
री रे पुण्ये पामियें रे, के तूठे जगदीश ॥ पुण्यविण  
न मिले रे एहवी गोरडी रे, जाणुं विशवावीश ॥  
॥ २ ॥ म० ॥ दाय उपायें रे ए लेवी सहो रे, ए वि  
ण रह्युं न जाय ॥ एहवी नारी रे जो हुं जोगवुं रे,

तो वंछित सुख आय ॥ ३ ॥ म० ॥ आवो आवो  
 जाइ रे जेला बेसीयें रे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ पा  
 णीवल मनैं रे तुज विण नवि गमे रे, जीवन प्राण  
 आधार ॥ ४ ॥ म० ॥ मननी वातो रे बेसो कीजि  
 यें रे, सुख दुःखनी एकांत ॥ गुणवंत पाखें रे केही  
 गोठडी रे, गुणवंत गुं भीरांत ॥ ५ ॥ म० ॥ तुं उ  
 पगारी रे जाजे पर दुःखडां रे, तुज समोनर नही  
 कोय ॥ तुज सुख दीठां रे तन मन उद्वसे रे, हीयडुं  
 हर्षित होय ॥ ६ ॥ म० ॥ मोहनगारा रे तें मुज म  
 न हयूं रे, तुज विण रह्युं रे न जाय ॥ मोहनी लगाइ  
 रे तें कांइ प्रेमनी रे, तुज पांखे न सुहाय ॥ ७ ॥  
 ॥ म० ॥ दिन तो कीजें रे तुज मन गोठडी रे, दिव  
 स संधेलो रे जाय ॥ रात्रिं जाजे रे ताहरे स्थानकें रे,  
 शैठ कहे चित्त लाय ॥ ८ ॥ म० ॥ अरज करुं तुं रे  
 तुजने एटली रे, अरज सफल कर मित्त ॥ पर उप  
 गारी रे कर उपगारडो रे, चतुर खुशी कर चित्त ॥  
 ॥ ९ ॥ म० ॥ जे आपणनें रे वांछे वालहा रे,  
 तेहने न दीजें पूंठ ॥ तन मन दीजें रे तेहने आप  
 णुं रे, आदर दीजें उक्किठ ॥ १० ॥ म० ॥ वचन न  
 लोपे रे उत्तम कुल तणो रे, छेह दीयें केम तेह ॥

जेम तेम जोडे रें प्रात सोहामणी रे, निगुण न पाळे  
तेह ॥ ११ ॥ म० ॥ घणुं घणुं तुजंभेरे कहीयें किश्युं  
रे, तुं ठे दीनदयाल ॥ कहे जिन हय विचारो बालहा  
रे, ए थइ दशमी ढाल ॥ १२ ॥ म० ॥ सर्वगाथा ॥ १०७

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे मदालसा, सांनल कंत सुजाण ॥ श्रोत तणी  
ए प्रीतडो, हानि जाण निज प्राण ॥ १ ॥ कंत म रा  
चे एहशुं, ए में कपटी दीठ ॥ कालाशिरनो आदमी,  
होये डष्ट मुहमिठ ॥ २ ॥ अति विश्वास न कीजियें,  
कंत कटूं कर जोडि ॥ एक कनक अरु कामिनी, एहथी  
अनरथ कोडि ॥ ३ ॥ यतः ॥ पुष्पं दृष्ट्वा फलं दृष्ट्वा दृष्ट्वा,  
च नव यौवनं ॥ इविणं पतितं दृष्ट्वा, कस्य नो चलते  
मनः ॥ १ ॥ कुमर कहे सांनल प्रिये, ए उपगारी श्रोत ॥  
आपण ऊपर एहनी, सुनजर शीतल दृष्ट ॥ ४ ॥ मुह  
मीठा जूठा हिये, हुं न पतीजुं ताय ॥ मीठा बोलो मो  
रियो, साप सपूछो खाय ॥ ५ ॥ धूता होय सलह  
णा, कुसती होय सलह ॥ खारा पाणी सीयलां, ब  
हुफल होय अखळ ॥ ६ ॥ वयण नारीनां अवगणी,  
निशिदासर रहे पास ॥ अवसर देखी नाखियो, सा  
यरमांहे तास ॥ ७ ॥ कोलाहल करी उठियो, प

डियो समुद्रमजार ॥ मित्र सनेही माहरो, उत्तमच  
रित्र कुमार ॥ ७ ॥ जाण्युं तुरत मदालसा, ए पापीनां  
काम ॥ नाख्यो जलमां मुज पति, रोवण लागी तामा ॥ ए

॥ ढाल अग्यारमी ॥ जावननी देशी ॥

॥ परम सनेही वालम माहरो रे, आतमनो आ  
धार ॥ मुज अबलाने मूकी एकली रे, सायरमां निर  
धार ॥ १ ॥ प० ॥ हुं कंता कहेती इण नीचनो रे,  
म करीश तुं विश्वास ॥ माहरुं कहुं न मान्युं नाह  
ला रे, तो फल पास्यां तास ॥ २ ॥ प० ॥ तें नड  
क जोले जाण्युं सहु रे, धवलुं तेडलुं दूध ॥ पण कप  
टीतुं कपट उलख्युं नहीं रे, हियडुं जाल अगु  
॥ ३ ॥ प० ॥ धूतारा तो मुह मीठा होये रे, पण  
हियडामां पाप ॥ जुंनं करतां ते बीहे नहीं रे, उप  
जावे संताप ॥ ४ ॥ प० ॥ मुख दीवाली होली हि  
यडले रे, एहवा डुर्जन होय ॥ पग पग नाखे पापी  
पासला रे, रखे पतीजो कोय ॥ ५ ॥ प० ॥ आशा  
ढेदी माहरी पापीयें रें, कीथी निपट निराश ॥ जीवन  
विण हुं जीवुं केहि परें रे, नाखे प्रबल निःश्वास ॥ ६ ॥  
॥ प० ॥ जाणे पावसजलधर उल्लस्यो रे, नयणन  
खंमे धार ॥ पियु पियु चातक ज्युं प्रमदा करे रे, जा

( २८ )

ग्यो विरह अपार ॥ ७ ॥ प० ॥ कृण रोवे कृण जो  
वे दश दिशें रे, कृण कृण थाये चेत ॥ कूरे यूय ट  
ली मृगली परें रे, पियु तोड़युं कांइ हेत ॥ ८ ॥  
प० ॥ प्राण दोशो माहरां हवे प्राहुणां रे, तुजं विण  
सुगुणा नाह ॥ ए दुःख में खमणुं जाये नहीं रे,  
विरह लगायो दाह ॥ ए ॥ प० ॥ में चिंतामणि रत  
न लह्युं दतुं रे, राख्युं करी जतन ॥ पण ठाजे नहीं  
पुण्य विहूणडा रे, रांकां घरे रतन ॥ १० ॥ प० ॥  
किश्युं करुं सांनल साहेलडी रे, हियडे दुःख न समा  
य ॥ हीयडुं फाटे रत्नतलावसुं रे, केम जीवुं मोरी मा  
य ॥ ११ ॥ प० ॥ प्राणसनेही जलनिधिमां पडयो  
रे, मने मलवानी आश ॥ ऊंपापात करुं जो नीरमां रे,  
तो पोहोचुं पियु पास ॥ १२ ॥ प० ॥ हवे जीव्यानो  
स्वाद नहीं किश्यो रे, वर ठोडीजें जी प्राण ॥ ढाल थ  
इ पूरी अग्यारमी रे, कहे जिनहर्ष सुजाण ॥ १३ ॥  
॥ प० ॥ सर्वगाथा ॥ १३ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ प्रीतमविण जीवुं नहीं, ठंमिश पापी प्राण ॥  
निशदिन वीधे मुज नणी, पंचबाण सपराण ॥ १ ॥  
काया पावक संग्रहो, जीव ग्रहो जमराण ॥ रूप रसा

( २९ )

तल संग्रहो, गुण थाउ पापाण ॥ १ ॥ मरवाने उ  
 द्यत थई, वृक्षा कहे तेणि वार ॥ म मर म मर  
 मूरख म मर, सांजल कहुं विचार ॥ ३ ॥ फांसी विश  
 नरुणः करे, पाणी अग्निप्रवेश ॥ गिरितरुवरथी प  
 डी मरे, कुमरण कहियें एसं ॥ ४ ॥ एह मरणथी  
 नवो नवें, लहियें मरण अठेह ॥ पुण्यें मजरो जी  
 वतो, तुज प्रीतम सुसनेह ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ नणदल हे मोहन मुदरी लै ग  
 यो ॥ ए देशी ॥

॥ शेठ कहे आवी करी, रूडां वयण रसाल ॥ हे व  
 निता सुण वातडी, तुं म पड म पड दुःखजाज ॥ १ ॥ रम  
 णी हे मान वयण तुं माहरुं, मांहरुं वयण तुं पाल ॥ २ ॥  
 ॥ एआंकणी ॥ मित्र अमूलक माहरो, उत्तमचरित्र कु  
 मार ॥ ते मुजने नवि वीतरें हो, साले हियडा मजार  
 ॥ ३ ॥ ॥ पुण्य दुवे तो पामियें, मन मान्या मित्त ॥  
 नयणवयण रलियामणा हो, पाले अविहड प्रीत ॥ ३  
 ॥ २ ॥ ॥ खाणां पीणां खेलणां, न गमे मीठा नाद ॥ वात  
 विगत गुणगोठडी हो, लागे सहु निःस्वाद ॥ ४ ॥ २ ॥  
 दुःख म कर तुं गोरडी, दुःख कीधे शुं थाय ॥ मूउ ते  
 जीवे नही हो, जो वरसां सो थाय ॥ ५ ॥ २ ॥



चतुर नारी तुज सारिखी, अवर न दीठी कांय ॥ सु  
 ख जोगव संसारनाहो, मुजशुं प्रीत बनाय ॥ ६ ॥  
 ॥ २० ॥ राणी धणीयाणी करुं, मारुं घर तुज हाथ  
 ॥ जीवन्तां विरवूं नही हो, मुज तुज अविचल साथ  
 ॥ ७ ॥ २० ॥ तेतो परदेशी हतो, जाति वंश नहीं  
 शुद्ध ॥ शुं फूरे ठे तेदने, तुंही कुजवंत मुद्ध ॥ ८ ॥  
 ॥ २० ॥ पानफूल विचें राखशुं, डुहविश नहीं किण  
 वात ॥ चाकरनी परें चाकरी हो, करशुं तुज दिन  
 रात ॥ १० ॥ ले लाहो जोबन तणो, सफलो कर  
 अवतार ॥ तन धन जोबन प्राहुणो हो, जातां न ला  
 गे वार ॥ १० ॥ २० ॥ तुजशुं लागी प्रीतडी, तुज  
 विण रह्युं न जाय ॥ तुज मलवा मन उल्लसे हो, अवर  
 न कोइ सुहाय ॥ ११ ॥ २० ॥ ते माटे तुजने कहुं,  
 समऊ समऊ गुणवंत ॥ हठ ठोडी हितशुं मलो हो,  
 तुं कामिनी हुं कंत ॥ १२ ॥ २० ॥ तुजशुं मुजशुं प्री  
 तडी, सरजी सरजणहार ॥ जावि न मटे केहथी हो,  
 जो करे लाख प्रकार ॥ १३ ॥ २० ॥ तुं कोण हुं को  
 ण किहांथकी, आवी मजियो संच ॥ विधिनो ला  
 खियो हूतो हो, तुज मुज प्रेम प्रपंच ॥ १४ ॥ २० ॥  
 कोण करावे कोण करे, करतां करेशुं होय ॥ ढाल थइ

( ३१ )

ए बारमी, जिनहर्ष कहे तुं जोय ॥ १ ॥ र ॥ स ॥ २४ ए ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी ते जेवना, कुमरी कीध विचार ॥  
 ए पापी मुज नांजशै, शीलरयण शणगार ॥ १ ॥ कूड  
 कपट करी राखवुं, शील अमूलक एह ॥ चिंतवे ए  
 म मदाजसा, वयण कहै सुसनेह ॥ २ ॥ सुणो शेर  
 साहिब तुमै, वयण कह्युं सुप्रमाण ॥ मरण थयुं प्री  
 तम तणुं, दशदिन तेहनी काण ॥ ३ ॥ तुमने गम  
 शे तेम होशे, चडी तुमारे हाथ ॥ परमेश्वर मेव्यो  
 हवे, ताहरो माहारो साथ ॥ ४ ॥ उतावला सो बा  
 रा, धीरें सब कबु होय ॥ माली सिंचे सो घडा, रूतु  
 आवे फल होय ॥ ५ ॥ किणहीक नगरें जाइयें, मास  
 दिवसने ठेह ॥ पुरपतिनी लेइ आगना, आवीश ता  
 हरे गेह ॥ ६ ॥ नाम म लेइश माहरुं, हुं बुं ताहरी  
 नार ॥ शेर जणी कीधो खुशी, कुमरी बुद्धिविचार ॥ ७ ॥  
 ॥ ढाल तेरमी ॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ वृक्षा कहे कुमरी जणी रे, करियें शील जतन ॥  
 त्रिभुवनमांहे दोहेलुं रे, लहेतां एह रतन रे ॥ १ ॥ ब  
 हेनी, सांजल माहारी वात ॥ शीलें अरि करी केशरी  
 रे, न करे कोइ घात रे ॥ ब ० ॥ ए आंकणी ॥ वायु

रतन सुप्रसादथी रे, तट लहियें कुशलेह ॥ तिहां जो  
 मुज प्रातम मले रे, तो रहीयें निज गेह रे ॥ १ ॥ ब० ॥  
 न मलें तो आपण बेदुरे, लेखुं संजम नार ॥ वयण  
 सुणी कुमरी इस्यां जी, हरखो चित्त मजार रे ॥ २ ॥  
 ॥ ब० ॥ मानी वात मदालसा रे, कीधुं अंगीकार ॥  
 कुमर तणो हवे सांनजो रे, जेह थयो अधिकार रे ॥  
 ॥ ४ ॥ ब० ॥ जलनिधिमांहे कुमर पड्यो रे, मकर  
 ग्रह्यो ततकाल ॥ सायर तट ते आवियो रे, धीवर  
 नाख्यो जाल रे ॥ ५ ॥ ब० ॥ महामकर घरे आणि  
 यो रे, कीधो तास विनाश ॥ मत्स्यउदरथी नीसख्यो  
 रे, जीवित मानोलाश रे ॥ ६ ॥ ब० ॥ देखी धीवर  
 चिंतवे रे, मोहोटी नर ठे एह ॥ सेवा खिजमत सहु  
 करे रे, कुमर रहे तस गेह रे ॥ ७ ॥ ब० ॥ हवे स  
 मुद्दत्त शेवना रे, बाहण चाव्यां जाय ॥ वायुरतन  
 पूजा करी रे, आल्या बे दिनमांय रे ॥ ८ ॥ ब० ॥  
 तिहां अजाण्यां आवियां रे, मोटपल्ली वेलाकुल ॥ रा  
 जा नरवर्मा तिहां रे, जिनधर्मखुं अनुकूल रे ॥ ९ ॥  
 ॥ ब० ॥ समुद्दत्त लेइ जेटणुं रे, लेइ कुमरी साथ ॥  
 रायसनायें आवियो रे, जेटयो अवननीनाथ रे ॥ १० ॥  
 ॥ ब० ॥ आदर नृपें बहु आपियुं रे, पूठ्यो कुशल

( ३३ )

लाप ॥ ए कोण नारी शैवजी रे, सुरकन्या गुण व्याप  
 रे ॥ ११ ॥ ब० ॥ शैव कहे स्वामी सुणो रे, चंद्दीपें  
 लही एह ॥ नारी एहनी स्वामिनी रे, सुंदर सुगुण  
 सनेह रे ॥ १२ ॥ ब० ॥ तुम आदेशें माहरी रे, थाये  
 एह कलत्र ॥ बोली तास मदालसा रे, नाखे किशुं  
 अखत्र रे ॥ १३ ॥ ब० ॥ राजा आगल पापीयो रे,  
 नाखे एह अलीक ॥ राजा जो न्यायी दुवे रे, तो तु  
 ज लावे नीक रे ॥ १४ ॥ ब० ॥ निर्लज शुं लाजे न  
 ही रे, जपतो आलपंपाल ॥ कहे जिनहर्ष पूरी अई  
 रे, तेरमी ढाल रसाल रे ॥ १५ ॥ ब० ॥ सर्वगाथा ॥ १७ ॥  
 ॥ दोहा ॥

॥ लाज करी कुमरी कहे, वयण राय अवधार ॥  
 मुज पतिने एणे पापीयें, नाख्यो समुद्रमजार ॥ १ ॥  
 राय सुणी कोपें चडयो, घाव्यो कारागार ॥ माल पां  
 च सय पोतनो, मूक्यो निजजंमार ॥ २ ॥ सांनल  
 पुत्री नृप कहे, रहे तुं मुज आवास ॥ पुत्री मुज ति  
 लोत्तमा, रहे तुं तेहनी पास ॥ ३ ॥ बेहेन तेह ठे ता  
 हरे, सखी तणे परिवार ॥ सुखें समार्थें रहे सदा,  
 चिंता दूर निवार ॥ ४ ॥ दीनजणी तुं दान दे, ढोडि

सयल दुःखदाह ॥ किणही तट लागो होशे, तो निर  
त करशे तुज नाह ॥ ५ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥ हो मतवाले साजनां ॥ ए देशी ॥

॥ सुखें रहे कुमरी तिहां, मननी बीक सहुं जागी  
रे ॥ राय मानी पुत्री करी, पुण्यदशा तस जागी रे ॥

॥ १ ॥ सु० ॥ पंच रतन सुपसायथी, तिहां दान नि  
रंतर आपे रे ॥ श्रीजिनधर्म करे सदा, सहुने जिनधर्म  
थापे रे ॥ २ ॥ सु० ॥ सतीजनोचित कन्यका, ले नि

यम मले नहिं सांइ रे ॥ त्यां सुधी जूयें सुयवुं, स्नानादिक  
न करवुं कांइ रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ नारे वस्त्र न पहेरवां, प  
हेरुं नहीं फूलसुगंधो रे ॥ अंगविलेपण नवि करुं, तं

बोल तजुं प्रतिबंधो रे ॥ ४ ॥ सु० ॥ स्वादिम में तजवुं  
सही, नीलां फल नक्षण नवि करवां रे ॥ नियम ली  
यो सहुं शाकनो, दूध दहीं मही परिहरवां रे ॥ ५ ॥

॥ सु० ॥ सूस सहुं सुखडी तणुं, साकर गुड खांम न  
खावे रे ॥ पायस सरस न जीमवुं, जिमवा काजें न  
वि जावे रे ॥ ६ ॥ सु० ॥ एक झुक्त नित्य जमीवुं, कारणवि

ण किहांये न जावुं रे ॥ गोखें पण नवि बेसवुं, लोक  
स्थिति चित्त न लावुं रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ सरस कथा  
करवी नहीं, गाथा काव्य श्लोक सरागी रे ॥ कानें

पण सुणवां नहीं, करवी तो कथा वैरागी रे ॥ ८ ॥  
 ॥ सु० ॥ वात न करवी पुरुषशुं, चित्राम पुरुष न  
 विलोकुं रे ॥ नाटक ख्यालुं जोवं नहीं, जातुं चंचल  
 चित्त रोकुं रे ॥ ९ ॥ सु० ॥ एहवी एलीधी आखडी,  
 पियु न मले तिहां लगे पांजुं रे ॥ ध्यान करुं नव  
 कारनुं, पूजा करी पाप पेखाजुं रे ॥ १० ॥ सु० ॥  
 अन्य दिवस धीवर सहू, साथे करि उत्तम कुमारी  
 रे ॥ कांहिक काम वरो मली, आव्या मोटपल्ली पा  
 रो रे ॥ ११ ॥ सु० ॥ नरवर्मराय मंदावियो, पुत्री  
 कारण आवासो रे ॥ अति मनोहर सात नूमियो,  
 दीठां होय उह्नासो रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ पुरजी शोना  
 जोवतो, तिहां आव्यो कुमर सुजाण रे ॥ कामका  
 रीगर तिहां करे, निजशास्त्र सहूना जाण रे ॥ १३ ॥  
 ॥ सु० ॥ ठाम ठाम ते वीसरे, खोटां घर किहां च  
 णावे रे ॥ ढाल थइ ए चादमी, जिनहर्ष कुमार  
 शीखावे रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ सर्वगाथा ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर वास्तुविद्या विडुष, पण न मले अहंकार ॥  
 सूत्रधारने शीखवे, सघजोही अधिकार ॥ १ ॥ चम  
 त्कार चित्त पामिया, चिंते सद्गु सूत्रधार ॥ ए नर दीसे

ठे सही, विश्वकर्मा अवतार ॥ १ ॥ नक्ति करे सहु  
कुमरनी, पासें राख्यो तास ॥ पुर खोख्यो सहु धीव  
रें, न लह्यो थया उदास ॥ ३ ॥ इहां आवी खोयुं  
रतन, अमनें पड्यो धिक्कार ॥ एम निज आतम निंदता,  
सहु गया तेणि वार ॥ ४ ॥ रायकुमरनी सान्निध्ये,  
पूरो थयो आवास ॥ सतनूमि सुरगृह जीश्यो, माहा  
ज्योति सुप्रकाश ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥ आदर जीव द्दमागुण आदर ॥

॥ ए देशी ॥

॥ पूरु थयुं मंदिर कुमरीनु, जोवा आव्यो राय  
जी ॥ देखीने रलियायत हुठ, कीधो बहुत पसाय जी  
॥ १ ॥ उत्तम चरित्र कुमार निहाव्यो, रूपकजा गुणजोइ  
जी ॥ राजा नरवर्म चित्त विचारे, ठे राजनपुत्र कोइ  
जी ॥ २ ॥ पू० ॥ एहवुं नृप चिंतवीने वलियो, कु  
मरी रमवा काज जी ॥ वनवाडीमांहे संचरियां, सइयर  
तणे समाजजी ॥ ३ ॥ पू० ॥ मशीयो जुयंग क्रीडा क  
रंतां, ततद्वण थइ अचेत जी ॥ उपाडीने मंदिर आणी,  
नयण धवल थयां श्वत जी ॥ ४ ॥ पू० ॥ अंगो अं  
ग महाविष व्याणुं, गारुडविद्या जाण जी ॥ ते सहु ते  
डाव्या राजवीए, उळे कुमरी प्राणजी ॥ ५ ॥ पू० ॥ म

णि मूली मधुरा बहु आल्या, कीधा कोडि उपाय जी ॥  
 पण समाधि थायनहीं किमही, किमहीविष नवि जाय  
 जी ॥ ६ ॥ पू० ॥ नगरमांहे, पडहो फेराव्यो, जे कोइ वि  
 द्यावंतंजी ॥ रायतणी कन्या जीवाडे, ते पसाय लहं  
 तजी ॥ ७ ॥ पू० ॥ अर्थ रांज कुमरी नृप आपे, कुम  
 र सुण्यो विरतंत जी ॥ पंडह ठव्यो ततकृण आवीने,  
 उपगारी गुणवंत जी ॥ ८ ॥ पू० ॥ उत्तम रायसमीपें  
 आव्यो, तेहिज नर ए होय जी ॥ आदर देईपासें बेसा  
 ख्यो, स्वारथ मीठो होय जी ॥ ९ ॥ पू० ॥ एक स्वार्थ  
 ने वली गुण मांहे, आदर लहे अपार जी ॥ कन्या आ  
 णी तिहां उपाडी, कुमर करे उपगार जी ॥ १० ॥  
 ॥ पू० ॥ मंत्र गणी पाणीशुं ठांटी, कुमरी यइ सचेत  
 जी ॥ कर जोडी राजा गुण गावे, धन्य धन्य तुं कुलके  
 त जी ॥ ११ ॥ पू० ॥ तें उपगार कियो मुज मोहोटो,  
 दीधुं जीवितदान जी ॥ मुज कन्याने तें जीवाडी, विद्या  
 तणा निधान जी ॥ १२ ॥ पू० ॥ तुजने शो उपगार क  
 रूं हुं, करुणावंत कृपाल जी ॥ ए जिनहर्ष कन्या तुज  
 दीधी, परणो पन्नरमी ठाल जी ॥ १३ ॥ पू० ॥ ३०० ॥

॥ दोहा ॥

॥ राय विचारे चित्तमां, ए नर ठे कुलवंत ॥ राज्य क



न्या देइ तेहने, हुं हवे रहुं निश्चित ॥ १ ॥ जोषी तुर  
त तेडावियो, नांखे एणि परें राय ॥ परणो कुमरी त्रि  
लोचना, वासर लगन बताय ॥ २ ॥ जोई पुस्तक टी  
पणुं, लगन कियो निरधार ॥ एह दिवस निर्दोष ठे,  
जोतां दिवस हजार ॥ ३ ॥ घणे महोत्सवहुं नृपति,  
वर कन्या परणावि ॥ दीधो राज्यनंभार सहू, करमोच  
न प्रस्ताव ॥ ४ ॥ कुमरी काज करावियो, सतनूमियो आवा  
स ॥ राय दियो रहेवा नणी, तिहां नोगवे विलास ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥ पंथीडानी देशी ॥

॥ दासीने कहे हवे मदालसा रे, प्रीतमनी कांइ  
न थइ सार रे ॥ सायर मांहे बूडयो ते सही रे, हंवे  
हुं जीवुं शे आधार रे ॥ १ ॥ दाण ॥ दान दीयो में दी  
न दुःखी नणी रे, साते क्षेत्रें वावहुं वित्त रे ॥ श्रावक  
धर्म यथाशक्तें करे रे, जिनवरपूजा चोखे चित्त रे ॥  
॥ २ ॥ दाण ॥ हवे मुज बहेनी कुमरी त्रिलोचना रे,  
तेहने देइ पंच रतन रे ॥ दोहा लेइश हुं जिनवरतणी रे,  
पालिश संयम करिय जतन रे ॥ ३ ॥ दाण ॥ दासी क  
हे सांजल तुं स्वामिनी रे, म कर म कर मनमांहे वि  
षाद रे ॥ कोइ परदेशी वखो त्रिलोचना रे, जेहनो  
सहू बोले यशवाद रे ॥ ४ ॥ दाण ॥ रूपकला गुण

( ३९ )

जेहमांहे घणारे,सांजलीयें ठीए जेहनी ख्यात रे ॥खबर  
करुं जो दे तुं आगन्या रे, कुमरी कहे तो जो मोरी  
मात रे ॥ ५ ॥ दा० ॥ आवी कुमरी घर उतावली रे,  
दीगो उन्नमचरित्र कुमार रे ॥ गुप्ताकृति देखी नवि उ  
लख्यो रे, दीगो सुंदररूप आकार रे ॥ ६ ॥ दा० ॥  
कृण एक वात करी दासो वली रे, आवी निजकुमरी  
नी पास रे ॥ सांजल माहारी वात मदालसा रे, दीगो  
पुरुष जइ आवास रे ॥ ७ ॥ दा० ॥ रूपें तो तुज  
जरतार सारिखो रे,पण कांइक आकृतिमां फेर रे ॥ सां  
जली जाग्यो प्रेम मदालसा रे, वली मन लीधो पाठो  
घेर रें ॥ ८ ॥ दा० ॥ फट रे पापी मन गुं कियुं रे,  
किण उपर तें आय्यो राग रे,प्राणसनेही इहां आवी  
रहे रे, ऐहवुं किहांथी ताहरुं नाग्य रे ॥ ९ ॥ दा० ॥  
मिच्छा डकड दीधो मदालसा रे,हवे कुमरें पूढी निज  
नारि रे ॥ ए कोण वृद्धा इहां आवी दुती रे, कुमरी क  
हे सांजल जरतार रे ॥ १० ॥ दा० ॥ वयण बोलावी  
बहेन मदालसा रे, परदेशिणी तेहनी ठे दासो रे ॥  
कुमर चिंते ते तो माहारी प्रिया रे,जाग्यो राग अयो  
उध्वासीरे ॥ ११ ॥ दा० ॥ रोमांचित काया मन उ

लस्युं रे, नाम सुणी हरख्यो ततकाल रे ॥ पुण्य दुवे  
तो ते मुजने मळे रे, ए जिनहर्ष शोलमी ढाल रे ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वली मनमांहे चिंतवे, में फोगट धख्यो राग ॥ कि  
हां ते नारी मदालसा, रूपकला सोनाग ॥ १ ॥ समु  
दत्त लेइ गयो, पापो मुजने नाखि ॥ जिहां होये ति  
हां जइ मलुं, पण दैव न दीधी पांख ॥ २ ॥ ए सु  
ख लीलासाहेबी, ए नारी ए राज ॥ पण नही ना  
री मदालसा, तो ए सुख किण काज ॥ ३ ॥ हड्डामां  
ह मदालसा, मुख न जणावे वात ॥ माणे नारी त्रिलो  
चना, सुख विलसे दिन रात ॥ ४ ॥ सुख दुःख न क  
हे केहने, जे नर उत्तम होय ॥ संगतें नरम गमाय  
वो, वाट न लेवे कोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ श्रेणिकमन अचरिज थयुं ॥ ए देशी ॥

॥ एण अवसर तिहां सांजलो, आगल जे उपगारो  
रे ॥ मध्यान्हें जिन पूजवा, जिनगृह गयो कुमारो रे  
॥ १ ॥ एण ० ॥ करे विचार त्रिलोचना, वार घणी  
थइ आजो रे ॥ प्रीतम हजीय न आवियो, किशें विलं  
व्या काजो रे ॥ २ ॥ एण ० ॥ दासी मूकी देहरे, प्रीतम  
नरति लहाय रे ॥ सघळे हो जोयुं फरी, पण लाधो

नहिं किहाय रे ॥३॥ एण० ॥ करे विलाप त्रिलोचना, पिशु  
 पाखें न सुहावे रे ॥ उठे जल जेम माठली, तडफि तड  
 फि दुःख पावे रे ॥४॥ एण० ॥ राजा पण चिंता करे,  
 सुखि किहां नवि थाये रे ॥ दुःख सहु कोइ करी रह्या,  
 चिंतामां दिन जाये रे ॥५॥ एण० ॥ तेण पुरमांहे धनी  
 रहे, महेश्वरदत्त मनाय रे ॥ ठप्पन कोडि कनकनी,  
 निधि व्याजें व्यवसाय रे ॥ ६ ॥ एण० ॥ वाहण ज  
 लवट पांचशें, शकट पांचशें वहेतां रे ॥ गृह विपण प  
 ण पांचशें, पांचशें वखार समहिता रे ॥७॥ एण० ॥ गोकु  
 ल जेहने पांचशें, पांचशें गज मदमाता रे ॥ घोडा जा  
 स विलायती, पांचशें चंचल ताता रे ॥८॥ एण० ॥ पांचशें  
 सुंदर पालखी, पांच लाख नृत्य जेहने रे ॥ सुनट  
 पांचशें उलगे, पुत्री नही पण तेहने रे ॥ ९ ॥ एण० ॥  
 केटले एक दिने दीकरी, एक थइ गुणवंती रे ॥ चो  
 शठ नारिकला जणी, सुंदररूप सोहंती रे ॥ १० ॥  
 ॥ एण० ॥ सहस्रकला नामें जली, मनमां शेठ विचा  
 रे रे ॥ ए संसार असारता, पापें करी जीव नारे रे  
 ॥ ११ ॥ एण० ॥ कन्या सारिखो वर मले, तो तेह  
 ने परणावुं रे ॥ घरनो नार देई करी, संपद तास न  
 लावुं रे ॥ १२ ॥ एण० ॥ हुं कीदा-लेउं जैननी, आ

तमने हितकारी रे ॥ आतम तारुं आपणो, मनमां  
वात विचारी रे ॥ १३ ॥ एण०॥ वरनी करे गवेषणा,  
पण न मले मन गमतो रे ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थड, स  
त्तरमी ढालें नमतो रे ॥ १४ ॥ एण०॥ सर्वगाथा ॥ ३४४ ॥

॥ दीहा ॥

॥ पूठयु शैव निमित्तियो; कोण कन्या वरदाख ॥  
ज्ञान प्रयुंजी ते कहे, साची माने जाख ॥ १ ॥ महारा  
जा वर एहने, मलशे एकण मास ॥ सामग्री विवाहनी,  
करो सगाई खास ॥ २ ॥ महेश्वरदत्त खुशी थयो, करे  
महोत्सव जूरि ॥ लगन लीयो एक मासनो, वाजे मंग  
लतूर ॥ ३ ॥ स्वजन तेडावे दूरथी, मंगल अनुपम  
कीध ॥ मोहोटां तोरण बांधियां, नगरमांहे यश ली  
ध ॥ ४ ॥ धवल मढ्हावे गोरडी, वरने देवा काज ॥  
गज तुरंग वस्त्राजरण, करि राखे सहु साज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥ राजा जो मिले ॥ ए देशी ॥

॥ पुरमांहे थड सघले वात, महेश्वरदत्त विवाह  
विख्यात ॥ पुण्यें पामियें ॥ एतो मन मान्या सुखशा  
त ॥ पु० ॥ सांजली राय सजायें राय, मनमांहे वि  
स्मय वली थाय ॥ १ ॥ पु० ॥ पहेले मांमयो ठे  
विवाह, वरनी वात नदीसे कांही ॥ पु०॥ कोण मा

हाराजा इहां आवशे, पुत्री जेहने परणावशे ॥ १ ॥  
 ॥ पु० ॥ राय विचारें एहवुं चित्त, धन्य धन्य एह महे  
 श्वरदत्त ॥ पु० ॥ एहवी लक्ष्मीनो जे धणी, वैराग्यें ते  
 हने अबंगणी ॥ २ ॥ पु० ॥ देइ जमाइने घर सार,  
 पोतें लेशे संजम नार ॥ पु० ॥ हुं पण त्रिलोचना  
 नरतार, शुद्ध करी युं राजचंमार ॥ ४ ॥ पु० ॥ दीक्षा  
 लेइ आतमकाज, सारुं जेम पामुं शिवराज ॥ पु० ॥  
 महेश्वरदत्तशुं कियो विचार, आपण आशुं दीक्षा  
 धार ॥ ५ ॥ पु० ॥ पडहो नगर फेराव्यो राय, परदे  
 शीसैं देशी आय ॥ पु० ॥ त्रिलोचनावर निरति कहे, म  
 दालसा विरतंत जे लहे ॥ ६ ॥ पु० ॥ तेहने राजा आपे  
 राज, सहस्रकला कन्या शिरताज ॥ पु० ॥ पडहो नगर  
 निरंतर फरे, एहवां वचन मुखें उच्चरे ॥ ७ ॥ पु० ॥  
 मास एक दुउ जेटले, पडह ठव्यो पोपट तेटले ॥  
 ॥ पु० ॥ सूडो कहे वचन तेणि वार, जो जो राज  
 पुरुष अवधार ॥ ८ ॥ पु० ॥ लेजाउ मुज राज डवा  
 र, राय जमाइ कहुं विचार ॥ पु० ॥ मदालसा पति  
 नी कहुं शुद्धि, पूर्व वृत्तांत कहुं मुज बुद्धि ॥ ९ ॥ पु० ॥  
 तुमने वात कहुं हुं आज, कन्या सहस्रकला लहुं रा  
 ज ॥ पु० ॥ पंखानुं पण जाग्युं नाग्य, नहीतो मुज

ए किहांथी लाग ॥ १० ॥ पु० ॥ तेण पुरुषें कौतुक  
 ने काज, राय कन्हें आय्यो शुकरांज ॥ पु० ॥ रायस  
 जा पूराणी घणुं, लोक सद्दु आव्युं पुरतणुं ॥ ११ ॥  
 ॥ पु० ॥ मदालसा आय्यो इहां राय, त्रिलोचना प  
 रियचमां ठाय ॥ पु० ॥ हुं ज्ञानी सघले विख्यात,  
 तीन कालनी जाणुं वात ॥ १२ ॥ पु० ॥ राजा तिम  
 ह्मिज कीधुं सद्दु, नगर लोक मलियां तिहां वद्दु ॥  
 ॥ पु० ॥ बेठो सिंहासन नूपाल, कहे जिनदर्प अठार  
 मी ढाल ॥ १३ ॥ पु० ॥ सर्व गाथा ॥ ३६२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूत नविष्यत कालनी, केम कहेशे ए वात ॥ ज्ञा  
 न किहांथी एहमां, पशु तणी ए जात ॥ १ ॥ राजा  
 कहोने आपशे, पंखीने केम राज, राज्यपशु केम पाल  
 शे, अचरिज आशे आज ॥ २ ॥ कोइक ठे ए देवता,  
 कीधुं ठे ए रूप ॥ नहीं तो पोपट पंखियो, जाणे  
 किछुं स्वरूप ॥ ३ ॥ पहेली नारी मदालसा, तेहनोकहुं  
 प्रबंध ॥ सावधान थइ सांजलो, सकल कहुंसंबंध ॥ ४ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥ वात म का

ढो हो व्रत तणी ॥ ए देशी ॥

॥ वारु नगर वाणारसी, मकरध्वज नूपालो रे ॥

तास कुमर रलियामणो, उत्तम चरित्र दयालो रे ॥ १ ॥  
 ॥ वा० ॥ रीसावीनें नीकव्यो, नमतो नरुअब्ब आयो  
 रे ॥ प्रवहण बेसी चालियो, धरतो हर्ष सवायो  
 रे ॥ २ ॥ वा० ॥ गिरिजलंकांत समुद् विचें, तिहां  
 कूपकजल जरियो रे ॥ जलकारण मांहे गयो, बारी  
 मां उतरियो रे ॥ ३ ॥ वा० ॥ देवचुवन देखी क  
 री, पेठो मांही कुमारो रे ॥ लंकापति राक्षसतणी, पुत्री  
 रति श्रवतारो रे ॥ ४ ॥ वा० ॥ निरुपम नाम मदा  
 लसा, परणी बाहेर आयो रे ॥ समुद्दत्त वाहण  
 चढयो, जलविण सहु दुःख पायो रे ॥ ५ ॥ वा० ॥  
 पंच रत्न सुप्रसादथी, जल नोजन सुख आप्यां रे ॥  
 पर उपगारी एहवो, सहुनां संकट काप्यां रे ॥ ६ ॥  
 ॥ वा० ॥ स्त्री धन देखी चित्त चढ्युं, कुलभर्यादा  
 ठांमी रे ॥ समुद्दत्त व्यवहारियें, नाख्यो जलधि उ  
 पाडी रे ॥ ७ ॥ वा० ॥ तिमिंगल तट.जड रह्यो, मै  
 निक तास विदाख्यो रे ॥ निकलीयो ते जीवतो, मा  
 ङ्ही चित्त विचाख्यो रे ॥ ८ ॥ वा० ॥ ए कोड उत्तम  
 नर अठे, राख्यो तेहने पासें रे ॥ एक दिन पुर जोवा  
 नणी, आव्या मली उल्लासें रे ॥ ९ ॥ वा० ॥ पुत्री राय त्रि  
 लोचना, साप मशी जीवाडी रे ॥ परणी तिहां सुख नो



गवे, प्रीति परस्पर जाडी रे ॥ १० ॥ वा० ॥ एक  
 दिवस जिन पूजवा, कुमर गयो मध्यान्हें रे ॥ जिन  
 पूजा विधिछुं करी, एक चितें एक ध्यानें रे ॥ ११ ॥  
 ॥ वा० ॥ पुष्पमध्य दीठी तिहां, मदनमुद्रित मुख  
 नलिका रे ॥ उघाडी तंबोजीएं, सर्प मशी अंगुलिका  
 रे ॥ १२ ॥ वा० ॥ थइ अचेत पडयो तिहां, उत्तम  
 कुमर ततकालो रे ॥ कहे जिनहर्ष पूरी थइ, उंग  
 णीशमी ए ढालो रे ॥ १३ ॥ वा० ॥ सर्वगाथा ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तुजने नारी मदालसा, तणी कथा कही एह ॥ तु  
 ज कुमरी नरतारनी, सुधि कही में तेह ॥ १ ॥ सत्य प्रति  
 झा ताहरी, दे मुजने हवे राज ॥ सहस्रकला कन्या  
 सहित, माहरे एहछुं काज ॥ २ ॥ हुं तिर्यचसुख जो  
 गवुं, राज्य तणुं निशदीस ॥ सहस्रकला परणावजो,  
 तुजने छुं आशीष ॥ ३ ॥ राय कहे पंखी नणी, केम  
 देवराए राज ॥ कीर कहे उत्तम नणी, वचन तणी ठे  
 लाज ॥ ४ ॥ दइश तो लेइशखरो, नहींतो जइश मुज  
 ठाण ॥ वृत्ति करीश फल फूलनी, थाउं तुज कल्याण  
 ॥ ५ ॥ मायावी माणस हूये, कीर कहे सुण राय ॥  
 काम करी पोतातणुं, मुकर जाये कृण मांय ॥ ६ ॥

न घटे मुज रहेवुं इहां, तुं तो काढे इंद ॥ काम सखां  
 दुःख वीसखां, वैरी हूआ वैद ॥ ७ ॥ एम कही सू  
 डो उठियो, नृप राख्यो कर साहि ॥ धीरोया तुज आपी  
 गुं, अर्षि म धर मनमांहि ॥ ८ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥ तुंतो मारावालम रे गुज  
 रातीरा ॥ ए देशी ॥

॥ तुंतो माहारा वाहला रे पंखी सूवटा, तुने विन  
 ति करुं कर जोडी रे ॥ जीवे ठे कुमर के नहीं,  
 कांहि गांव हैयानी ढोडी रे ॥ १ ॥ तुं० ॥ वलतुं छुक  
 जांखे रे राजवी, मुजमांहे नहीं कांइ कूड रे ॥ तुज  
 आगल प्रथम कथा कही, तो न्याय पडी मुख धूड  
 रे ॥ २ ॥ तुं० ॥ एटली जो कथा कह्यांथकां, मुजने  
 तें नाप्युं राज रे ॥ तो आगल कहे गुं याशे सही,  
 गुं याशे माहारां काज रे ॥ ३ ॥ तुं० ॥ कुमरी कहे  
 ताम मदालसा, तुज पाये पडुं तुं कीर रे ॥ मुज उ  
 पर महेर धरी करी, कर नीवेडो खीर नीर रे ॥ ४ ॥ तुं० ॥  
 राजन कुमरी तुमें सांजलो, कहुं सापें मर्यो कुमार  
 रे ॥ धरणी पडियो नहीं चेतना, विष व्याप्युं अंग  
 अपार रे ॥ ५ ॥ तुं० ॥ नामें अनंगसेना गणिका ज  
 णी, जाणे अनंगसेना साक्षात रे ॥ सद्धु नरनां रे मा

न मोडयां जिणें, तेहनी शी कहियें वात रे ॥ ६ ॥  
 तुं० ॥ रूपें तोरें जींती अपहरा, रति जींती नारी अं  
 ग रे ॥ नागकुमरी रे जींती पातालनी, कोइ मांमी न  
 शके जंग रे ॥ ७ ॥ तुं० ॥ ते गणिका आबी. किण  
 कारणें, तेणें दीठो पडयो कुमार रे ॥ उपाडीने नि  
 जघर ले गइ, एतो मशियो ठे विषधार रे ॥ ८ ॥ तुं० ॥  
 विष अपहारी मणि आणीने, जलमांहे पखाली तेह  
 रे ॥ ते जलछुं रे सींचे कुमरने, निर्विष थयो ततरुण  
 देह रे ॥ ९ ॥ तुं० ॥ हुंतो तूठयो रे गणिका तुज न  
 णी, माग माग रूचे तुज जेह रे ॥ माग्यो द्यो जो  
 मुज साहिबा, सुख विलासो धरीय सनेह रे ॥ १० ॥  
 ॥ तुं० ॥ तेणे वेश्या रे मंदिर राखियो, चोथी नूइ जि  
 हां चित्रशाल रे ॥ ते साथें रे सुख संजोगना, जोगवे  
 दिन रात रसाल रे ॥ ११ ॥ तुं० ॥ तेणे गणिका रे  
 तेहने गुण कीगो, गुण मान्यो दीधो मान रे ॥ तुजने  
 संजलावी सद्गु कथा, मुज नापे तुं राजदान रे ॥ १२ ॥  
 तुं० ॥ तुजथी तो रे तेह कुमर जलो, वेश्याछुं मांमयो  
 घरवास रे ॥ निजवच निष्फल कीधुं नहीं, धन्य धन्य  
 तेहने साबाश रे ॥ १३ ॥ तुं० ॥ निज वाचा रे जे पाले न  
 हीं, ते माणस नही पण ढोर रे ॥ जिनहर्ष अइ ढा

ल बीशमी, शुक्र बोढ्यो एणिपोरें जर रे ॥ १४ ॥ तुं॥  
सर्वगाथा ॥ ४०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्ति दूत महाराज तुज, में पाम्युं सहु राजा ॥  
निरपराध मुज जाण दे, नहीं राज्यहुं काज ॥ १ ॥  
जान थयो इहां एटलो, गलशोपण जे काय ॥ पोंक  
न खाधो कर बढ्या, घरना चूक्या घाय ॥ २ ॥ वैद्य  
जणी कल्याण दुउ, दाह्णिण्य मूकी जेय ॥ पाहजां ध  
न लेइ पठें, गोली औषध देय ॥ ३ ॥ दाह्णिण्य मेढही  
नवि शक्यो, हुं मूरख शिरताज ॥ सर्व कथा कहीने प  
ठें, मागण लाग्यो राज ॥ ४ ॥ सांजल शुक्र राजा  
कहे, पूरण रोग न जाय ॥ वैद्य कह्युं धन नविल  
हे, तुं केम राज लहाय ॥ ५ ॥ तें अरधी कही वार  
ता, पूरो न कह्यो जेद ॥ मूढ उतावल कां करे, था  
शे सफल उमेद ॥ ६ ॥ अनंगसेना गृह जाइने, कुमर  
निहाली आज ॥ कथा सुणी सहु आगली, तुजने  
देइश राज ॥ ७ ॥ चलु जेवारें आवियुं, जमणनी  
जांगी आश ॥ तेम तुज वचन प्रतीत ठे, वेसो कृण  
आवास ॥ ८ ॥

॥ ढाल एकवींशमी ॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥

॥ राये चाकर मोकल्या रे, जोवा गणिकारे गेह ॥  
जइ जोजो घर तेहनूं रे, कुमर न दीगो तेहो रे ॥  
॥ १ ॥ ए गुं गुक कहुं, वैश्या घर केम जायो रे,  
उत्तम नरथकी, एतो कांम न थायो रे ॥ २ ॥ ए० ॥  
ताहरा घरमां सांजव्यो रे, उत्तम चरित्र कुमार ॥ तें  
राख्यो ठे कहे किहां रे, साचुं बोल गमार रे ॥ ३ ॥  
॥ ए० ॥ गुं जाणुं रे जाइयो रे, कुमर तणी हुं सार ॥  
राय जमाइ माहरे रे, जो आवे आगारो रे ॥ ४ ॥ ए० ॥  
घर खोली जोवो तुमें रे, शो च्रम राखो रे आम ॥  
दाथ तणा कांकण नणी रे, आरीसो गुं काम रे ॥  
॥ ५ ॥ ए० ॥ जोइ पाठा आविया रे, नृपने कहुं वृ  
त्तांत ॥ कुमर नहीं गणिका घरें रे, राजा थयो सचिं  
त रे ॥ ६ ॥ ए० ॥ गहन वीत नवि जाणियें रे, ठे को  
इ देव चरित्र ॥ राय कहे गुकरायने रे, किशुं पजा  
वे मित्तर ॥ ७ ॥ ए० ॥ तुज विण निरत न का पडे रे,  
कहे किहां मुज जामात ॥ किश्युं गुमानी थइ रह्यो  
रे, कहेने साची वातो रे ॥ ८ ॥ ए० ॥ सूडो कहे  
राजन सुणो रे, धूरत जाण्यो रे तुळ ॥ बालक जेम  
जोलावियो रे, तेम जोलाव्यो मुळ रे ॥ ९ ॥ ए० ॥

उत्तम ते उत्तम हुवे रे, मध्यम कदिय न हूंत ॥ अग  
 र दहे तन आपणुं रे, परिमल जग पसरंत रे ॥ १० ॥  
 ॥ ए० ॥ तुं उरसिया सारिखो रे, हुंतो सुखड सार ॥  
 घासंतां. घासे नही रे, धिक् तेहनो अवतारो रे ॥  
 ॥ ११ ॥ ए० ॥ तुजथी फल पाभ्युं नही रे, फोकट  
 कियो रे प्रयास ॥ सांजल हवे तुं सहु कहुं रे, सहुने  
 थाये उल्लास रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ अनंगसेना मन चिं  
 तव्युं रे, अनुषम रूप सौजाग्य ॥ राय जमाइ पण  
 सही रे, मलियो माहरे जाग्य रे ॥ १३ ॥ ए० ॥ ज  
 नम लगें ए माहरे रे, थाये जो जरतार ॥ मानव जव  
 सुकृतारथो रे, जोगवुं जोग अपारो रे ॥ १४ ॥ ए० ॥  
 मुज घरथी जाये नही रे, करियें तेह उपाय ॥ दोरो  
 मंत्रो सूत्रनो रे, बांध्यो तेहने पाय रे ॥ १५ ॥ ए० ॥  
 तेहनो कीधो सूवटो रे, नारी चरित्र विशाल ॥ एम जि  
 नहर्ष राख्यो घरें रे, एकवीशमी ए ढाजो रे ॥ १६ ॥  
 ॥ ए० ॥ सर्वगाथा ॥ ४३५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पोपट घाव्यो पांजरे, रात्रें दोरो ठोड ॥ पुरुष  
 करो सुख जोगवे, सफल करे मन कोड ॥ १ ॥ दि  
 वसें वली पोपट करे, निशि दिन एम करंत ॥ सूडो

मनमां चिंतवे, एशुं थयुं वृत्तंत ॥ १ ॥ मनुष्य  
 थकी तिर्थच थयो, में श्यां कीधां पाप ॥ आ नव तो  
 नवि सांजरे, शे पास्या संताप ॥ ३ ॥ हा हा जाणुं  
 में हवे, पिता अदीधी नार ॥ परणी कुमरी मदाल  
 सा, पांच रतन ग्रह्यां सार ॥ ४ ॥ ए बे पाप कियां  
 इहां, तेथी मश्यो जुयंग ॥ वली आव्यो वेश्याघरे,  
 नरथी थयो विहंग ॥ ५ ॥ एतो पाप तणा कुसुम,  
 फल आगमशुं प्रमाण ॥ तो नरकें पडवुं सही, ए  
 म निंदे अप्पाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥ साधुजी जलें पधा  
 ख्या आज ॥ ए देशी ॥

॥ अनंगसेनाना रागथी जी, रह्यो तिहां एक मा  
 स ॥ मेव्ही उघाडुं पांजरुं जी, गइ किण काज विमा  
 स ॥ १ ॥ नरेशर सांजल एह विचार ॥ अचरिजनो  
 अधिकार, सुणतां हर्ष अपार ॥ न० ॥ पडहतणी  
 उदघोषणाजी, सांजली नगर मोजार ॥ तिहांथी उ  
 ढी आवियो जी, पडह ठव्यो तेणि वार ॥ २ ॥ न० ॥  
 ते राजन हुं सूवटो जी, में सहु कह्यो विचार ॥ रा  
 जा एहवुं सांजली जी, हर्षित थयो अपार ॥ ३ ॥  
 ॥ न० ॥ पगथी दोरों ठोडियो जी, कुमर थयो तत

काल॥ सहुने अचरिज उपन्युं जी, थंयो प्रमोद विशा  
 ल ॥ ४ ॥ न० ॥ हंरखी कुमरी मदालसा जी, नय  
 णें नाह निहाल ॥ पाम्ब्यो हर्ष त्रिलोचना जी, विर  
 हाग्नि डःख टाल ॥ ५ ॥ न० ॥ परणावी बहु प्रेम  
 शुं जी, शेरमहेश्वरदत्त, सहस्रंकलानिज कन्यका जी॥  
 खरची बहुलुं वित्त ॥ ६ ॥ न० ॥ तीन नारी पुण्यें म  
 ली जी, सुरकन्या अवतार ॥ अनंगसेना चोथी अइ जी,  
 रूपतणो जंमार ॥ ७ ॥ न० ॥ राजा तेडी आरामिकी  
 जी, तेहने दीधी मार ॥ फूलमांहि नलिका धख्यो जी, पू  
 ढ्यो सर्पविचार ॥ ८ ॥ न० ॥ माजिनी कहे राजन सु  
 णो जी, तुम आगल कहुं साच ॥ समुद्रदत्त व्यवहारियो  
 जी, खोटो जेहवो काच ॥ ९ ॥ न० ॥ तेणें पापी मु  
 जने कहुं जी, देश तुज दीनार ॥ परखीने तुज पांच  
 शें जी, कुमर जणी तुं मार ॥ १० ॥ न० ॥ लोचें  
 मुज लक्ष्ण गयां जी, में कीधुं ए काज ॥ पानी मति  
 दुवे नारिने जी, केहनी नाणे लाज ॥ ११ ॥ न० ॥  
 राजा रोषातुर थयो जी, मारो पापी तेह ॥ मालणी प  
 ण मारो जइजी, दुकुम दियो नृप एह ॥ १२ ॥ न० ॥ ते  
 लेइ मारण निसखा जी, केहनी नाणे लाज ॥ करे राय  
 ने विनति जी, मकरध्वजंनो पूत ॥ १३ ॥ न० ॥ होण



( ५४ )

हार निश्चै दुवे जी, एहनो शो दोष ॥ कहे जिनह  
प बावीशमी जी, ठालें नृप मनरोष ॥ १४ ॥ न० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मूकुं नहीं ए जीवतां, एहनी करवी घात ॥  
जाख्यो नहीं एणें एटलो, रायतणो जामात ॥ १ ॥  
एक घर माकण परिहरे, न करे तास विनाश ॥ सु  
ज घरथी ए नवि टव्यां, बेनो करवो नाश ॥ २ ॥ वि  
नय करी नृपने कहे, उत्तमचरित्र कुमार ॥ महा  
राय जवितव्यता, करवो एह विचार ॥ ३ ॥ वांक न  
कांइ शेरनो, मालिणी नहीं कांइ वांक ॥ टले नह  
जे विधि लख्या, सुख दुःखना शिर आंक ॥ ४ ॥ इं  
इ चंइ नागेंइ नर, मोहोटा जेह मुणिंद ॥ कियां कर्म  
सहु जोगवे, बूटे नही नरिंद ॥ ५ ॥ किणशुं कीजें  
आमणो, किणशुं कीजें रोष ॥ केहनो दोष न का  
ठियें, कर्मतणो ए दोष ॥ ६ ॥

॥ ठाल त्रेवीशमी ॥ मोरियाना गीतनी

॥ देशी ॥ राये राणा रमे रंकुआ ॥ ए देशी ॥

॥ पाय पडी नृप तणे रे कुमार, विनति करीय  
समजाविया जी ॥ एहनं कीधुं पामशे एह, शेर मा  
लण बे मेह्हावियां जी ॥ १ ॥ शेरनुं सहु धन

लीध,मालणी काढ्या निज देशथीजी ॥ पहेलां पण  
 नृप मनमां वैराग्य; राज्य ग्राहक सुत पण नथी जी  
 ॥ १ ॥ देइ जमाइने राज्यचंमर,राय चारित्र शुन आद  
 स्यो जी ॥ महेश्वरदत्त पण रुद्रि समृद्धि, सहु देइ  
 शुद्ध संजम धन्यो जी ॥ ३ ॥ महेश्वरदत्त नृप कियो  
 विहार,संजम पाले निज निर्मलो जी ॥ शास्त्र सिद्धां  
 त जण्या गुरु पास, जेहनो यश थयो उज्जलो जी ॥  
 ॥ ४ ॥ समुद्र पर्यंत थयुं नृप राज्य, चुल्ल हिमवं  
 त लगें आगन्या जी ॥ उत्तमचरित्र थयो मा  
 हाराज, जेहने चार घरणी धन्या जी ॥ ५ ॥ चमरके  
 तुनी सांजलो वात, षष्ठिलक्ष राक्षसनो धणी जी ॥  
 तेणो नैमित्तिक पूठिया ताम, किहां मुज अरि नाखुं  
 उखणीजी ॥ ६ ॥ ते कहे सांजल राक्षस नाथ, पुत्री  
 तुज परणी मदालसा जी ॥ पंच रतन तुज सार चंम  
 र, तेह लइ गयो शुन दिशा जी ॥ ७ ॥ मोहोट पत्नी  
 नामें वेलाकुल, सकलतट तणो स्वामी थयो जी ॥ राय  
 विद्याधर सहु नम्या पाय, पुण्यथी राज्य मोहोटो लह्यो  
 जी ॥ ८ ॥ सांजली राक्षस एह विचार, चिंतवे चितमां  
 एहवुं जी ॥ देखो अलंघ्यनवितव्यता एह, विधि ल

खुं ते थुं तेहं जी ॥९॥ समुद्रमां शैलस्थितकूप ड  
 वार, देवता पण जइ नवि शकेजी ॥ गहन पाताल  
 खुवनें तिहां जइ, परणी मुज कुमरी नूचरथके जी ॥१०॥  
 पंचरत्न मुज जीवित प्राय, ले गयो हवे किंथुं कि  
 जियें जी ॥ ज्ञान नैमित्तकतणुं प्रमाण, नाग्य नूचर स  
 लहीजियें जी ॥११॥ एकलो शून्य दीपें हतो एह, तिहां  
 पण मनें जीत्यो एणे जी ॥ कहे जिनदर्ष पुणें फली  
 आश, ढाल त्रेवीशमी ए कहीज ॥१२॥ सर्वगाथा ४६३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे तो ए राजा थयो, पंचरतन सुप्रभाव ॥ ह  
 य गय पायक जट कटक, माहारो न लागे दाव ॥१॥  
 हवे जीपी हुं केम शकुं, केहनो राखुं शोष ॥ जे कि  
 रतारें वडा किया, तेहं केहो रोष ॥ २ ॥ प्राणें जा  
 स न पोहोंचियें, तेथुं किश्यो संग्राम ॥ तेहने नमियें  
 जाइने, तो विणसे नहीं काम ॥ ३ ॥ काज विचारी  
 जे करे, तेहनुं सीजे काम ॥ अविचाखुं धांधल पडे,  
 घटे महत्वने माम ॥ ४ ॥ हवे जमाइ ए थयो, क  
 लहतणुं नहीं गम ॥ हसतां रोतां प्राहुणो, राखुं  
 किस्यो विराम ॥ ५ ॥

॥ ढाल चौबीशमी ॥ मोरा साहिब हो श्री

शीतलनाथ के ॥ ए देशी ॥

॥ एहबुं चिंतवी हो ते मूकी संग्राम के, राक्षसपति  
 आब्यो तिहां ॥ करी प्रणिपत हो नृपने तजी मान  
 के, स्नेह सहित मलिया इहां ॥ १ ॥ पुण्याइ हो अ  
 धिकी संसार के, उत्तमचरित्र तुमारडी ॥ मुज पुत्री हो  
 अपहर अवतार के, विधियें तुज कारण घडी ॥ २ ॥  
 जोरावर हो सुर असुर नरिंद के, जावि आगल को  
 नहीं ॥ फोकटनो हो वहीयें मन गर्व के, महारो न  
 र्म नाग्यो सही ॥ ३ ॥ तुं माहारी हो पुत्रीनो कंत के,  
 थयो जमाइ माहरो ॥ तुज साथें हो माहरेहवे प्रीत के,  
 रूडो बांहुं ताहरो ॥ ४ ॥ मन केरी हो नागी सहु जी  
 ति के, ससरो जमाइ बेहु मय्या ॥ मुज पुत्री हो सरि  
 खो वरु एह के, मुह माग्या पासा ढब्या ॥ ५ ॥ पु  
 त्रीने हो जइ मलियो बाप के, बाप संघातें पुत्री म  
 ली ॥ हियडाखुं हो जीडी हेत आणी के, पुत्रीनी पू  
 गी रली ॥ ६ ॥ शिर धारी हो आणा लंकेश के, उत्तम  
 चरित्र नरेशनी ॥ लंकानुं हो देइने राज्य के, देइ न  
 लामण देशनी ॥ ७ ॥ मोकलीयो हो राक्षसपति रा  
 य के, सहुने आणंद उपनुं ॥ एकदिवसैं हो बेग द

रबार के, दूत आव्यो तिहां नूपनो ॥ ८ ॥ आणीने  
 हो रायने दियो लेख के, राय उघाड़ी वांचीयो ॥ मांहे  
 लखिया हो ठे बोल अमोल के, जेदथी टाढो हुवै दि  
 यो ॥ ९ ॥ स्वस्तिश्री हो प्रणमी जगदीश के, वाणा  
 रसीथी मन रसे ॥ मकरध्वज हो लिखित माहाराय  
 के, उत्तमचरित्र कुमर दिसैं ॥ १० ॥ आलिंगे हो  
 हरखें सस्नेह के, कुशल खेम वरतुं इहां ॥ तुमकेरा  
 हो बांहुं सुखखेम के, कागल दीयो ठो जिहां ॥ ११ ॥  
 जिण दिनथी हो तुं चाव्यो परदेश के, खबर करावी  
 में घणी ॥ दोडाव्या हो केडें अस्वार के, निरत न पामी  
 तुम तणी ॥ १२ ॥ चाव्या केडे हो पुरपाटण गाम के, प  
 र्वत द्वीप जमंतडां ॥ किहां न सुणी हो वत्स ताहरी  
 वात के, निशि दिन वाट जोवंतडां ॥ १३ ॥ निःस्नेही  
 हो तुं तो थयो पुत्त के, मात पिताने अवगणी ॥ भेदही  
 ने हो गयो तुं निरधार के, हियडे अग्नि दीधी घणी ॥  
 ॥ १४ ॥ ठोरुनें हो मन नाहिं दुःख के, मात पिता  
 दुःख करी मरे ॥ पूरी थइ हो चोवीशमी ढाल के,  
 कही जिनहर्ष जली परें ॥ १५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४८३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ तथा अहं वार्द्धक थयो, तुज विजोग न खमा

( ५९ )

य ॥ तुज विरहैं व्याकुल थयो, दिवस दोहिलो जा  
य ॥ १ ॥ तुजनें थंमे न दूहव्यो, कुवचन न कह्युं  
कोइ ॥ रीसावी नीकली गयो, ते पठतावो होय ॥  
॥ २ ॥ राज धुरंधर तुं कुमर, तुज उपर सहु मांन ॥  
निराधारां मूकी गयो, नलो गयो तुं ठांनि ॥ ३ ॥ लोक  
मुखें में सांनव्यो, मोटपल्ली वेलाकुल ॥ उत्तमचरित्र  
राजा थयो, नाग्य थयुं अनुकूल ॥ ४ ॥ गाढा र  
लीयायत थया, उल्लसीयां थम प्राण ॥ पण लेख  
दर्शणें आवजे, जेम थाये कव्याण ॥ ५ ॥ हुं घरडो  
बूढो थयो, मुजथी न चाले राज ॥ राज देशने तुज  
नणी, हुं सारुं निज काज ॥ ६ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥ कलालणी तें माहारो राजन मो  
हियो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ कुमरजी लेख वांची मन रंगशुं हो लाल, ढील  
म करजे पुत्त ॥ कु० ॥ पाणी अपीत पधारजो हो लाल,  
आव्यां रहेशे सूत ॥ कु० ॥ १ ॥ वेहेलो अहिंयां आ  
वजे हो लाल ॥ कु० ॥ तुज विण शूनो देशडो हो  
ल, तुज विण शूनुं राज्य ॥ कु० ॥ तुज विण शूनो दृग  
डो हो लाल, आव्यां रहेशे लाज ॥ कु० ॥ २ ॥ व०  
॥ कु० ॥ राज धुरंधर तुं सही हो लाल, तुज विण के

बुं राज ॥ कु० ॥ तुं कुलदीपक सेहरो हो लाल, तुं सहुनो  
 शिरताज ॥ कु० ॥ ३ ॥ व० ॥ कु० ॥ जो चाहे सुख मो न  
 णी हो लाल, वांढे मुज कल्याण ॥ कु० ॥ तो वहे  
 लो आवे इहां हो लाल, टाढां होय मुज प्राण ॥ कु०  
 ॥ ४ ॥ व० ॥ कु० ॥ नाग्यवंत तुं दीकरो हो लाल, विन  
 यवंत गुणवंत ॥ कु० ॥ मावित्रांने मूकीने हो लाल,  
 बेगो जइय निचिंत ॥ कु० ॥ ५ ॥ व० ॥ कु० ॥ रा  
 ज्य लखुं अमें सांनव्युं हो लाल, मोटपल्ली वेलाकुल  
 ॥ कु० ॥ मनमां रलियायत थइ हो लाल, नाग्य थ  
 युं अनुकूल ॥ कु० ॥ ६ ॥ व० ॥ कु० ॥ तुजनें शुं  
 लखियें घणुं हो लाल, तुं सहु वातें जाण ॥ कु० ॥  
 थोडामां समजे घणुं हो लाल, आव्या तणां वखा  
 ण ॥ कु० ॥ ७ ॥ व० ॥ कु० ॥ हैयुं नराणुं हरख  
 शुं हो लाल, वांची सहु समाचार ॥ कु० ॥ .ततह  
 ण बूटी लोयणें हो लाल, आंसू केरी धार ॥ कु० ॥  
 ॥ ८ ॥ व० ॥ कु० ॥ बाप नणी दुःख में दियो हो  
 लाल, हुं थयो पुत्त कपुत्त ॥ कु० ॥ खाये हियडुं फो  
 लोने हो लाल, माय तणो जिम लूत्त ॥ कु० ॥ ९ ॥  
 व० ॥ कु० ॥ मंत्रीसर परधानने हो लाल, राय नलावी रा  
 जा ॥ कु० ॥ नारी चार निज सैन्यशुं हो लाल, चाव्यो स

( ६१ )

हु लेइ साज ॥ कु० ॥ १० ॥ व० ॥ कु० ॥ वाणार  
सी नयरी तणी हो लाल, लशकर साथें अखूट  
॥ कु० ॥ अखंम प्रयाणें वाटमां हो लाल, चलि  
आव्यो चित्रकूट ॥ कु० ॥ ११ ॥ व० ॥ कु० ॥ म  
हासेन राजा सांजव्यो हो लाल, उत्तम चरित्र नरिं  
द ॥ कु० ॥ आव्यो ठे सोमो जइयें हो लाल, मजियें  
मन आनंद ॥ कु० ॥ १२ ॥ व० ॥ कु० ॥ कटक सुजट  
शुं जइ मव्यो हो लाल, आव्या नगर मजार ॥ कु०  
॥ ढाल थइ पञ्चवीशमी हो लाल, कहे जिनहर्ष वि  
चार ॥ कु० ॥ १३ ॥ व० ॥ सर्वगाथा ॥ ५०५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ माहासेन हेतशुं मव्यो, कर जोडी कहे एम  
॥ मित्र जलें पाउ धारिया, वर्त्ते ठे सुंख खेम ॥ १ ॥  
तुम सुपसायें कुशल ठे, आव्यो मलवा काज ॥ क  
पा करि सुज उपरें, माहाराजा वयो राज ॥ २ ॥ मेह  
तणी परें ताहरी, निशदिन जोतो वाट ॥ सुज पुण्यें तं  
आवियो, आज थया गहगाट ॥ ३ ॥ उत्तमचरित्र  
नरिंदने, राजा देई राज ॥ पोतें संयम आदखो, सा  
खां आतमकाज ॥ ४ ॥ केटला एक दिन तिहां र  
ह्यो, मलवाने मेदपाट ॥ आण भनावी आपणी,



लाट जोट करणांठ ॥ ५ ॥ कामदार पोता तणा, मे  
 वही चढ्यो नूपाल ॥ आव्यो गोफाचलगिरें, केवी के  
 रो काल ॥ ६ ॥ वीरसेन राजा थयो, कटकतणी सु  
 णी वात ॥ चार अक्षोयणी सैन्यगुं, परवरियो सुप्रजात  
 ॥ ७ ॥ सीमा आवी उत्तखो, मूक्यो सन्मुख दूत ॥ दू  
 त कह्युं मत आवजे, जो थाये रजपूत ॥ ८ ॥ जो  
 कांकल करवा मर्ते, राखे जो रजवट ॥ तो वहेजो थइ आ  
 वजे, थाओ बहु खलखट ॥ ९ ॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥ मुज लाज वधारो रे, तो राज प  
 धारो रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुणि वयण विचित्रो रे, ए तो थयो शत्रो रे, हवे  
 उत्तमचरित्रो, युद्ध करण चढ्यो रे ॥ बे लशकर मजी  
 यां रे, मांहो मांहे अडियां रे, सहु सुनट आफलि  
 या, कांकल ऊपड्यो रे ॥ १ ॥ रण घोर मंझणुं रे,  
 जाय न ठंमाणुं रे, उखाणो खोजा पाडा, जेंसा आ  
 थडे रे ॥ शर चिहुं दिशि तूटे रे, बगतर कस तूटे रे,  
 वजें नाल वहूटे, धरती धडहडे रे ॥ २ ॥ हथनाल  
 हवाइ रे, आवाज मचाइ रे, वजें आवी बरढीना घा  
 व, लागे घणा रे ॥ सूरु एक फूजे रे, गयघड आलूजें रे,  
 रवि सूजे नही, थंधारुं बिहामणुं रे ॥ ३ ॥ घणा रो

घें मारे रे, तीखी तरवारें रे, जे हारे ते जायो नही, र  
 जपूतणी रे ॥ हाकी हाक वाजे रे, गयवीर जेम गाजे  
 रे, रखे लाजे सात, परियागत आपणी रे ॥ ४ ॥ खल  
 खंमे विहंमे रे, पग एक नं ठंमे रे, वली आवी मंमे  
 रे, साहामा थरि हैये रे ॥ देखीने कोपे रे, जखा क्रो  
 धा टोपें रे, नवि लोपे रणवट, पग पाठा नवि दिये  
 रे ॥ ५ ॥ जूजे एम शूरा रे, हथियारें पूरा रे, बलवं  
 त सनूरा, घाव साहामा लीये रे ॥ राणीना जाया रे, ह  
 एदाने पाया रे, तेम आया रे राया, जयहाथा दीये  
 रे ॥ ६ ॥ निशाणें घाय रे, वाजे शरणाय रे, सिंधूडे  
 मचाइ रे, वेढ बिहामणी रे ॥ तरवारें त्राढे रे, जानं  
 ता पाढे रे, तेम शूरा ठे ते जूजे, साम्हे थणी रे ॥  
 ॥ ७ ॥ उलट्या वरसाला रे, वहे लोही खाला रे, म  
 ठराला मतवाला, हव मेढे नही रे ॥ घायें घूमंता रे, के  
 इधड जूजंता रे, रुंम मुंम हसंता, नयकारी सही रे ॥  
 ॥ ८ ॥ माटीनुं घाय रे, हथियारसबाह रे, मुज सा  
 मो आय रे, जो बलवंत ठे रे ॥ स्वामी बपुकारे रे, तुं वै  
 री संहारे रे, शूरोशिरदार रे, तुं सम कोण थढे रे ॥  
 ॥ ९ ॥ लखगाने लडाया रे, लखगाने लडिया रे, र  
 डवडीया रे, तुंम घणां सुनटोतणी रे ॥ कांकल देखेवा

( ६४ )

रे, जोगिणी बल देवा रे, तेम करण बल लेवा रे, नूत फरे घणां रे ॥ १० ॥ एम महायुंढ मातो रे, वारे न हीं थातो रे, संसरातो रे, पाढो कोइ न उंसरे रे ॥ पुण्याइ जोरें रे, ते अधिके तोरें रे, निज पराक्रम फोरे रे, चिंते तेम करे रे ॥ ११ ॥ नृप उत्तमचरित्रो रे, बहु पुण्यविचित्रो रे, निजशत्रु रें बांध्यो, जाली जीवतो रे ॥ वीरसेन लजाणो रे, मुजथी सपडाणो रे, मुज ली धो घाणो रे, जे सबलो हतो रे ॥ १२ ॥ निज आण मनायो रे, ठोडयो ते रायो रे, वैराग्य आयो रे, मन वीरसेनने रे ॥ ठवीशमी ठालें रे, जिनहर्ष निहाले रे, स हु टाले रे, ढेपने निज मनै रे ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ५४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ मान मलिन थयुं माहरुं, जो रह्यो राजमज्जा र ॥ सुखकारण जे जाणियें, ते सहु दुःख दातार ॥ १ ॥ संपदमां आपद वसे, सुखमांहे दुःख वास ॥ रोग वसे निज नोगमां, देह मरण आवास ॥ २ ॥ ए संसारी जीवने, बधन ठे धन दार ॥ मूरख माने सुख करी, मधुलेपी खज्जदार ॥ ३ ॥ मान रहे नहीं केहनुं, एणे संसार मज्जार ॥ जींती कोण जाइ शके, एम नृ

प करे विचार ॥४॥ पहेले हुं चेत्यो नहीं, धर्म नखे  
व्योदाव॥तो आवी उत्तमचरित्र, नेजे दीधो घाव॥५॥

॥ ढाल सत्तावीशमी ॥ चतुर सनेही

: मोहनां ॥ ए देशी ॥

॥ ए कारण वैराग्यनो, रांयतणे मन आयो रे ॥  
राज्यरुद्धि ठोडी करी, करे धर्मउपायो रे ॥१॥ ए०॥  
पुण्यवंत नर एह ठे, ए नर अनमी नामें रे॥तो माहारी  
प्रभुता हवे, एहिज नूपति पामे रे ॥ २ ॥ ए० ॥ वी  
रसेन नृप एहवो, मनमां करिय विचारो रे ॥ उत्तमच  
रित्र जणी कहे, ए व्यो राज जंमारो रे ॥३॥ ए० ॥ हुं  
दीक्षा लेश हवे, ठोडी राज्यजंमारो रे ॥ एह लखुं  
तुज नाग्यमां, संग्रह्य तुं हितकारो रे ॥ ४॥ ए०॥ उत्तम  
चरित्र नरिंदने, देइ राज्यविख्यातो रे ॥ वीरसेन संय  
म लिये, सहस्रपुरुष संघातो रे ॥ ५ ॥ ए० ॥ केट  
लाएक दिन तिहां रही, देश मनावी आणो रे ॥  
पुण्यतणे सुपसाजले, पग पग लहे निरवाणो रे ॥ ६ ॥  
ए० ॥ चतुर राय तिहांथी चढ्यो, पोताने पुर आयो रे  
॥ बापें बहु महोत्सव करी, पुरप्रवेश करायो रे ॥७॥  
ए० ॥ कुमर पिता पायें नम्यो, पुत्रपिता हेतें मलिया  
रे॥ जननी उरकुंजीडियो, आजमनोरंथ फलियारे॥८॥

ए०॥ चार वट्ट पांये पडी, सासु दे आशीयो रे ॥ अ  
 विचल जोडो तुम तणी, फलज्यो आश जगीशो रे  
 ॥ ए ॥ ए० ॥ मात पिता हर्षित थयां, हर्ष्यो सहु  
 परिवारो रे ॥ राय करे अनुमोदना, ऐ ऐ पुण्य अपारो  
 रे ॥ १० ॥ ए० ॥ पुत्र गयो थयो एकलो, ए कधि  
 संपद पामी रे ॥ नव निधि जिहां जावे तिहां, शा  
 पुरुषा अनुगामी रे ॥ ११ ॥ ए० ॥ उत्तम चरित्र  
 कुमारनें, गुन मूढूरत गुन दीसें रे ॥ मकरध्वज नृ  
 पखहथें, दीधुं राज्य जगीशें रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ रा  
 ज्य करो सुत ए तुमें, अमें हवे संयम लीजें रे ॥ चोथो  
 आश्रम आवियो, आतम साधन कीजें रे ॥ १३ ॥  
 ए० ॥ लेई सहुनी आज्ञा, व्रत लीधुं नृपालो रे ॥  
 कहे जिनहर्ष उत्साहगुं, सत्तावीशमी ढालो रे ॥ १४ ॥  
 ए० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चारे राज्य स्वामी थयो, उत्तमचरित्र नरि  
 द ॥ पूरव पुण्य पसाउलें, दिन दिन अधिक आण  
 द ॥ १ ॥ चारे अपठर सारिखी, चारे चतुर सुजा  
 ए ॥ चारे नारो पतिव्रता, चारे माने आण ॥ २ ॥  
 चालीश लक्ष अश्व जेहनें, चालीश लक्ष गजहोड ॥

चालीश लक्ष रथ रूयडा, पायक चारें कोड ॥ ३ ॥  
 चालीश कोडि ग्रामाधिपति, रुदितणो जहीं पा  
 र ॥ चार राज्य सुख जोगवे, दिन दिन अधिक वि  
 स्तार ॥ ४ ॥ जिन प्रासादं करावियां, कीधी तीरथ  
 जात्र ॥ अकरा कर सहु मैलिया, पोष्या उत्तम पा  
 त्र ॥ ५ ॥ बिंब नराव्यां जिनतणां, पुस्तक नखां जं  
 मार ॥ साहमी बहल पण कीयां, पर उपगार अपार ॥ ६ ॥

॥ ढाल अछावीशमी ॥ चूनडीनी ॥ अथवा ॥

प्राणी बाणी जिनतली ॥ ए देशी ॥

॥ एम धर्म करंतां अन्यदा, आव्या तिहां केवल  
 धार रे ॥ वांदण काजें नृप चालियो, उलट धरि चि  
 त्त अपार रे ॥ १ ॥ ए० ॥ पांचे अनिगम नृप सा  
 चवी, वांदी बैठा मुनि पास रे ॥ मुनिवर दे मीठी  
 देशना, सांजलतां अंग उल्लास रे ॥ २ ॥ ए० ॥ सं  
 सारीजीव सुणोतुमो, जिन धर्म करो तुमें जायो रे ॥ सं  
 सार सायरमां बूडतां, तरवानो एह उपायो रे ॥ ३ ॥  
 ॥ ए० ॥ संसार अनंत जमंतडां, मानवजव लाधो  
 एह रे ॥ दश दृष्टांतें करि दोहिलो, चिंतामणि स  
 रिखो जेह रे ॥ ४ ॥ ए० ॥ वली श्रुत सांजलवुं दो  
 हिलुं, सुणतां उतरे मनकाट रे ॥ सांजलतां श्रुत

हियडा तणां, उघडे अज्ञान कपाट रे ॥ ५ ॥ ए० ॥  
 सहदृशा पण दोहिजी, जीवने आवतां जाण रे ॥  
 जेम जल न रहे काचे घडे, तेम श्री जिनवरनी वाण  
 रे ॥ ६ ॥ ए० ॥ वीर्य फोरवुं दोहिलुं, संजमने  
 विषय सुजाण रे ॥ ए चार अंग ठे दोहिलां, पामी  
 ने करो प्रमाण रे ॥ ७ ॥ ए० ॥ एतो धर्मवेलाएं  
 जीवने, आलस आवे बहु नांति रे ॥ आरंज वेलायें  
 जागतो, निशदिन करवानी खांति रे ॥ ८ ॥ ए० ॥ जे  
 जीव हणे बोले मृगाले अदत्त अब्रह्मशुं चित्त रे ॥ प  
 रिग्रह मेले बहु नांतिनो, दुर्गतिशुं तेहने प्रीत रे ॥  
 ॥ ९ ॥ ए० ॥ दूर करी तेरे काठिया, क्रोधादिक चार  
 कषाय रे ॥ फिंपी पाचेंडिना जोगने, जिनधर्म सोहेलो  
 थाय रे ॥ १० ॥ ए० ॥ कोण मात पिता केहनी सुता,  
 केहना सुत केहनी नार रे ॥ दुर्गतिजातां इण जीवने,  
 कोई नही राखणहार रे ॥ ११ ॥ ए० ॥ सहु कोइ स्वारथशुं  
 सगुं, स्वारथ पाले सहु नेह रे ॥ जबही स्वारथ पहाँ  
 चे नही, तो तुरत दिखावे ठेह रे ॥ १२ ॥ ए० ॥ मू  
 रख कहे माहरो माहरो, ए धन ए घर परिवार रे ॥ प  
 रजव जाये जीव एकलो, पण कोय न जाये लार रे  
 ॥ १३ ॥ ए० ॥ तो खोटी ममता मूकीने, करो धर्म

( ६९ )

थइ उजमाल रे ॥ जिनहर्ष दीधी मुनिदेशना, अछा  
वीशमी ए ढाल रे ॥ १४॥ए०॥ सर्वगाथा ॥ ५६३॥

॥ दोहा ॥

॥ दीधी एणि परें देशना, सांनजी सहुको लोक ॥  
परम प्रमोद थयो हवे, रविंदरीन जेम कोक ॥ १ ॥  
राजा पूठे मुनि प्रते, विनय करी कर जोड ॥ नगवन्  
केणे कर्म करी, पामी संपद कोड ॥ २ ॥ सायर  
सांहे केम पड्यो, मैनकघर रह्यो केम ॥ शुक्र थइ ग  
णिका घर रह्यो, कहो मुजने थयो जेम ॥ ३ ॥ केवल  
ज्ञानी मुनि कहे, सांनल राय सुजाण ॥ कीधां कर्म  
न ठटियें, जोगवियें निरवाण ॥ ४ ॥ जे जेहवां कीजें  
कर्म, तेथी फल प्रापत्त ॥ पूरवनव सुए ताहरो, ल  
हि संपत्त विपत्त ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥ पास जिणंद

जुहारियें ॥ ए देशी ॥ .

॥ सुए राजा केवली कहे, हिमवंत नूमि सुवि  
शालो रे ॥ सुदत्तग्रामा नामें जलो, धनधान्य समृद्धि  
रसालो रे ॥ १ ॥ सु० ॥ धनदत्त कौडुंबिक वसे, ते  
चार वधू जरतारो रे ॥ पहिलां इव्य हतुं घणुं, कालें  
गयो धनविस्तारो रे ॥ २ ॥ सु० ॥ दारिद्र्यो पासो थ



यो, तिहां आव्यां चार मुनीशो रे ॥ चोरें लूट्यां क  
 व्पडां, टाढें धूजे निशि दीसो रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ धनद  
 त्त नइक जावियो, अनुकंपा मनमां आणी रे ॥ वस्त्र  
 प्रावरण पोता तणां, वहोरंवायां उत्तम प्राणी रे ॥ ४ ॥  
 ॥ सु० ॥ चारे स्त्री अनुमोदना, कीधी प्रिय धन अव  
 तारो रे ॥ धनदत्त तेणें पुण्यें करी, तुं राय थयो शिर  
 दारो रे ॥ ५ ॥ सु० ॥ चार राज्य पाम्या इहां, ते  
 चारे वस्त्र प्रजावें रे ॥ पांच रत्न बहु धन लह्यां, व  
 लि नारी चार सुहावे रे ॥ ६ ॥ सु० ॥ तेणे कर्में  
 तुं मीननें, पेटें वसियो कोइ कालो रे ॥ मैनिक घर प  
 ण तुं रह्यो, ए कर्म तणी सहु चालो रे ॥ ७ ॥ सु० ॥  
 कोइएक नव तें मुनि नणी, मेहेलो देखी सुगाणो  
 रे ॥ गंधाए मत्स्य सारिखो, ते कर्म तिहां बंधाणो रे ॥  
 ॥ ८ ॥ सु० ॥ सहस्रतमे पहिले नवें, तें पोपट पंजर  
 घाव्यो रे ॥ ते पापें पोपट थयो, तुज कर्में ए फ  
 ल आव्यो रे ॥ ९ ॥ सु० ॥ अनंगसेना पूरव नवें,  
 निज सहियर कृत शणगारो रे ॥ आवा वेश्या बहेन  
 डी, हांसी कीधी तेणिवारो रे ॥ १० ॥ सु० ॥ तेणें  
 कर्में वेश्या थइ, राजादिक सुणी वृत्तांतो रे ॥ ऐ ऐ  
 कर्मविटंबना, पाम्यो वैराग्य महंतो रे ॥ ११ ॥

सुण कारणकेवली कहे ॥ ए आंकणी ॥ राज्य दीयुं  
 निज पुत्रनें, चारे नारि संघातें रे ॥ रुद्धि राज्यादि  
 क ठोडिने, संयम लीधो मन खातें रे ॥ १२ ॥ सु० ॥  
 चारित्रःपाली उक्ललुं, तप करि कर्म खपायो रे ॥ अं  
 तकाल अणसण करा, सुरलोक तणां सुख पायो रे  
 ॥ १३ ॥ सु० ॥ महाविदेहें सीऊशे, नृप उत्तमचरित्र  
 कुमारो रे ॥ वस्त्रदानथी सुख लह्यां, द्यो दान सुणी  
 अधिकारो रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ जूत वेद सायर शशी  
 १७४५, आशो शुद्धी पंचमी दिवसें रे ॥ उत्तमचरि  
 त्र कुमारनो, में रास रच्यो सुजगीशें रे ॥ १५ ॥ सु० ॥  
 श्री जिनवर सुप्रसादथी, श्रीपाटण नयर मऊारो रे ॥  
 गाथा सत्याशी पांचशें, उगणत्रीशमी ढाल उदा  
 रो रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ श्री खरतर गह्व गुण निलो,  
 श्री जिनचंद सूरिंदो रे ॥ वाचक शांतिहर्ष गणि, जिन  
 हर्ष सदा आणंदो रे ॥ १७ ॥ सु० ॥ स० ॥ ५७५ ॥

इति वस्त्रदानोपरि श्री उत्तम

चरित्रकुमाररास संपूर्णः ॥

ग्रंथा ग्रंथ ॥ ५०१ ॥



